Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 08 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 14 जून 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अहिंसा के लिए जिसका समर्पण है उसे शर्त आदि की बात नहीं करना चाहिये।

One who is dedicated to nonviolence should not put any condition or wager.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

मैराथन बैठकों के पहले ही दिन मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा- पारदर्शिता और तत्परता अनिवार्य

- मुख्यमंत्री ने खेती किसानी से जुड़े अपने अनुभव साझा करते हुए उत्पादकता बढ़ाने दिए आवश्यक निर्देश
- वर्षा काल में पशुधन को बिमारियों से बचाने के लिए व्यापक स्तर पर टीकाकरण करने कहा
- गौवंश के संरक्षण व संवर्धन के लिए सभी संभागों में बनेगा एक एक गौ अभ्यारण्य
- देवभोग के दुग्ध उत्पादों की बिक्री बढ़ाने अच्छी ब्रांडिंग और मार्केटिंग पर जोर, आईआईएम अध्ययन कर देगा सलाह
- केज कल्चर, बॉयोफ्लाक जैसे नवाचारों से मछली पालन को मिलेगा बढ़ावा

रायपुर (विश्व परिवार)। आचार सहिंता की अवधि समाप्त होने के बाद छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने राज्य के विकास की गति तेज करने के लिए आज से विभिन्न विभागों की मैराथन समीक्षा बैठकें लेनी शुरू कर दी। आज उन्होंने कृषि से संबंधित विभागों से इसकी शुरूआत करते हुए अधिकरियों से उनकी तैयारियों के संबंध में जानकारी ली और खेती किसानी से जुड़े स्वयं के व्यवहारिक अनुभवों को भी साझा किया। श्री साय स्वयं भी कृषक है और उनका परिवार अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से खेती किसानी पर ही निर्भर रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अच्छे परिणाम के लिए पूरी पारदर्शिता और तत्परता के साथ काम किया जाना अनिवार्य है।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि हमें इस तरह के कदम उठाए जाने की आवश्यकता है, जो किसानों को उनकी उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रेरित करें। परंपरागत खेती में हर आवश्यक सहायता उन तक तत्परता से पहुंचाने के साथ-साथ आधुनिक खेती और देश भर में हो रहे नवाचारों से भी उन्हें अवगत कराने की आवश्यकता है। राजधानी रायपुर स्थित अपने निवास कार्यालय में आयोजित समीक्षा बैठकों में मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है कि किसानों, पशुपालकों और दुग्ध उत्पादकों की आय में बढ़ोत्तरी हो। अधिकारियों को अपने अनुभव बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्षा काल में पशुओं को होने वाली बिमारियों की रोकथाम के लिए मुस्तैदी के साथ काम किया जाना आवश्यक है। श्री साय ने पशुधन विकास विभाग, छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी दुग्ध महासंघ और मछली पालन विभाग के कार्यों की गहन समीक्षा की। उन्होंने कहा कि पशुपालन, मछली पालन एवं दुग्ध उत्पादन जैसे व्यवसाय किसानों और पशुपालकों के आय का बड़ा स्त्रोत हैं, इनसे जुड़ी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से निश्चित रूप से किसानों की आय में बढ़ोत्तरी होगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने पशुधन विकास विभाग की समीक्षा के दौरान के कहा कि प्रदेश में गौवंश की रक्षा और संवर्धन के लिए सभी संभागों के एक-एक जिले में गौ अभ्यारण्य की स्थापना की जाएगी।

मुख्यमंत्री साय ने पशुधन विकास विभाग के अधिकारियों से प्रदेश में पशुधनों की संख्या और वार्षिक दुग्ध, अंडा एवं मांस उत्पादन एवं उपलब्धता की जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति अंडा, दुग्ध और मांस की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उत्पादन बढ़ाने जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने वर्षा काल में पशुओं को संक्रामक बिमारियों से बचाने के लिए व्यापक स्तर पर टीकाकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने पशुओं के नस्ल सुधार के लिए चलाई जा रही योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर भी बल दिया। साथ ही पशुधन विभाग की राज्य और केन्द्र के प्रवर्तित योजनाओं का लाभ भी अधिक से अधिक पशुपालकों तक पहुंचाने को कहा। पशुधन विकास विभाग के अधिकारियों ने विभाग की आगामी कार्ययोजना और लक्ष्यों के बारे में मुख्यमंत्री को विस्तृत जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी दुग्ध महासंघ के कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि दूध और दुग्ध उत्पादों की बिक्री एवं दूध उत्पादन करने वाले किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए समुचित उपाए किए जाएं। उन्होंने दुग्ध महासंघ के ब्रांड देवभोग की बिक्री और आमदनी बढ़ाने के लिए आउटलेट की संख्या में वृद्धि और अन्य विकल्पों के लिए भारतीय प्रबंध संस्थान से विस्तृत अध्ययन कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इसके लिए अच्छी मार्केटिंग और ब्रांडिंग जैसी व्यवसायिक पद्धतियों का सहारा भी लिया जाए। अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को प्रोसेस फ्लो चार्ट के माध्यम से दुग्ध संकलन से लेकर उपभोक्ता तक पहुंचने तक की पूरी प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने मछलीपालन विभाग के अधिकारियों के साथ विभागीय कार्यो एवं योजनाओं की समीक्षा की।

अजित डोवल तीसरी बार बने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, पीके मिश्रा बने रहेंगे प्रधान सचिव

नई दिल्ली (आरएनएस)। नरेंद्र मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में अजित डोवल को फिर से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाया गया है। बता दें कि अजित डोवल तीसरी बार भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाए गए हैं। बता दें कि रिटायर्ड आईएएस अधिकारी पीके मिश्रा को प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव के रूप में नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति प्रधानमंत्री के कार्यालय में की गई है। साथ ही उनके कार्यकाल के दौरान उन्हें वरीयता तालिका में कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया जाएगा। बता दें कि अजित डोवल और पीके मिश्रा का कार्यकाल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ ही पूरा होगा। इस बाबत एक लेटर जारी कर कहा गया है कि कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने अजित डोवल को एनएसए के रूप में नियुक्ति दी है। बता दें कि 10 जून से यह आदेश प्रभावी होगा। उनकी नियुक्ति पीएम मोदी के कार्यकाल के साथ या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो, समाप्त हो जाएगी।

पेमा खांडू ने ली पद एवं गोपनीयता की शपथ, 2016 से लगातार हैं अरुणाचल के मुख्यमंत्री

ईटानगर (आरएनएस)। पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश में एक बार फिर खांडू राज होगा. जी हां पेमा खांडू ने लगातार तीसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली है. गुरुवार 13 जून को बीजेपी के शीर्ष नेताओं की मौजूदगी में पेमा खांडू ने पद और गोपनीयता की शपथ ली.

बता दें कि पेमा खांडू 2016 से ही अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं. हालांकि इस दौरान उन्होंने महज पांच महीने में तीन राजनीतिक दलों के साथ काम किया. कांग्रेस छोड़कर खांडू पीपीए में गए और इसके बाद उन्होंने कुछ ही महीनों में बीजेपी का दामन थाम लिया. एक दिन पहले यानी 12 जून को पेमा खांडू को विधायक दल का नेता चुना गया था.

नेता चुने जाने के बाद पेमा खांडू ने राज्यपाल से मिलकर सरकार बनाने का दावा पेश किया और 13 जून को वह तीसरी बार प्रदेश के मुखिया बन गए. बता दें कि अरुणाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव 19 अप्रैल को आयोजित किए गए थे. जबकि इसके नतीजे 2 जून 2024 को घोषित हुए थे. नतीजों में बीजेपी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 60 विधानसभा सीट में से 46 सीटों पर कब्जा जमाया था.

कुशल राजनीज्ञ होने के साथ-साथ पेमा खांडू की रुचि खेल और संगीत में भी है. जब भी पेमा खांडू को राजनीति से समय मिलता है वह म्यूजिक और खेल में व्यक्त बिताते हैं. क्रिकेट खेलने का शौक रखने वाले खांडू कई टूर्नामेंट में हिस्सा ले चुके हैं. इसके अलावा वह प्रदेश में भी खेलों को प्रोत्साहित करते रहे हैं. इनमें फुटबॉल, क्रिकेट के साथ-साथ अन्य खेल भी शामिल हैं. पेमा खांडू की शिक्षा की बात करें तो उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के हिंदू कॉलेज से इतिहास में ग्रेजुएशन की उपाधि हासिल की. पेमा ने काफी कम उम्र में मुख्यमंत्री पद संभाल लिया था. 36 वर्ष की आयु में ही वह पहली बार सीएम बने. पेमा अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती जिले तवांग की मुक्तो सीट पर अपना होल्ड रखते हैं. यहीं से वह 2016 से लगातार जीत करते आ रहे हैं.

नीट विवाद : 1563 छात्रों के ग्रेस अंक हटाए जाएंगे, फिर से दे सकते हैं परीक्षा

नई दिल्ली (आरएनएस)। राष्ट्रीय प्रवेश-सह पात्रता परीक्षा (नीट) से जुड़े विवाद में दाखिल याचिकाओं पर गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई।न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और संदीप मेहता की पीठ ने मामले में सुनवाई करते हुए कहा कि परीक्षा में ग्रेस अंक पाने वाले 1,563 छात्रों के ग्रेस अंक हटाए जाएंगे और ये छात्र दोबारा परीक्षा दे सकते हैं।पीठ ने कहा कि वह काउंसिलिंग पर रोक नहीं लगा सकते। पीठ ने राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) से 2 हफ्ते में जवाब भी मांगा।

रिपोर्ट के मुताबिक, एनटीए ने कोर्ट में कहा कि लिखने के लिए कम समय पाने वाले सभी 1,563 उम्मीदवारों के ग्रेस अंक हटाए जाएंगे और उन्हें दोबारा परीक्षा देने का विकल्प दिया जाएगा। जो छात्र फिर से परीक्षा नहीं देना चाहते, उनके ग्रेस अंक हटने के बाद वाले अंक मान्य होंगे। नीट की दोबारा परीक्षा 23 जून को होगी और परिणाम 30 जून तक आएगा। काउंसिलिंग 6 जुलाई से शुरू होगी।

सुप्रीम कोर्ट में नीट में गड़बड़ी को लेकर कई याचिकाएं दायर की गई हैं, जिसमें डॉ पाण्डेय और शिवांगी सहित 10 छात्रों ने परीक्षा की सत्यनिष्ठा पर सवाल उठाया है।उन्होंने कोर्ट से काउंसिलिंग रोकने, परीक्षा रद्द करने और दोबारा आयोजित करने की मांग की है।गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट ने जो फैसला दिया है वह अभ्यर्थियों को ग्रेस अंक देने को लेकर है।

राजनाथ सिंह ने रक्षा मंत्री का कार्यभार संभाला

नई दिल्ली (आरएनएस)। देश की 18वीं संसद के गठन के बाद राजनाथ सिंह ने एक बार फिर रक्षा मंत्री की जिम्मेदारी संभाल ली है। गुरुवार के दिन दिल्ली में उन्होंने अपना कार्यभार संभाला। उन्हें लगातार दूसरी बार यह जिम्मेदारी दी गई है। 2014 में गृहमंत्री की जिम्मेदारी उठाने वाले राजनाथ सिंह 2019 से रक्षा मंत्रालय संभाल रहे हैं। लगातार दूसरी बार रक्षा मंत्रालय मिलने पर उन्होंने कहा कि अगले पांच साल में उनका लक्ष्य देश को सुरक्षित रखने के अलावा

सुरक्षा के अलावा अर्थव्यवस्था में कैसे देंगे योगदान बताया

आत्मनिर्भर भारत को आगे बढ़ाना होगा। इस तरह से वह देश की अर्थव्यवस्था में भी योगदान देने का लक्ष्य बना चुके हैं।

दूसरी बार रक्षा मंत्री का कार्यभार संभालने के बाद राजनाथ सिंह ने कहा पीएम मोदी ने एक बार फिर मुझे रक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी दी है। हमारी प्राथमिकताएं पहले की तरह ही रहेंगी। देश की सुरक्षा पर पूरा ध्यान रहेगा। हम एक मजबूत आत्मनिर्भर भारत बनाना चाहते हैं। रक्षा विनिर्माण में हम आत्म निर्भर होना चाहते हैं। हम 21,000 करोड़ से ज्यादा हथियार-सुरक्षा उपकरण का निर्यात कर चुके हैं। हमारा लक्ष्य अगले पांच साल में इस आंकड़े को 50,000 करोड़ तक ले जाना है। हमें अपनी तीनों सेनाओं थल सेना, जल सेना और वायु सेना पर गर्व है।

जी-7 शिखर सम्मेलन : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इटली दौरे पर रवाना

नई दिल्ली (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इटली के लिए रवाना हो गए हैं. पीएम मोदी गुरुवार शाम इटली की प्रधानमंत्री जोर्जिया मेलोनी के निमंत्रण पर इटली की यात्रा कर रहे हैं. इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार यानी 14 जून को जी7 आउटरीच शिखर सम्मेलन में शिरकत करेंगे. शिखर सम्मेलन से इतर पीएम मोदी और इटली की प्रधानमंत्री जोर्जिया मेलोनी के बीच द्विपक्षीय बैठक भी होगी. बता दें कि लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने और तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद पीएम मोदी पहली विदेश यात्रा कर रहे हैं.

कठुआ के सैडा सोहल में फिर दिखे संदिग्ध

श्रीनगर (आरएनएस)। जम्मू संभाग के जिला कठुआ के हीरानगर के सैडा सोहल गांव में गुरुवार को फिर संदिग्ध दिखे हैं। आतंकियों की तलाश में सुरक्षाबलों ने फिर अभियान शुरू कर दिया है। इसी गांव में बुधवार को ही सुरक्षाबलों ने 15 घंटे के ऑपरेशन में दो आतंकियों को ढेर किया था। जिला कठुआ की तहसील हीरानगर के सैडा सोहल गांव में मंगलवार की रात से चल रहे आतंकियों के खिलाफ अभियान में सुरक्षाबलों को बड़ी कामयाबी मिली। इलाके में दहशत फैलाने वाले दो आतंकियों को सुरक्षाबलों ने ढेर कर दिया जबकि इस मुठभेड़ में सीआरपीएफ का एक जवान भी बलिदान हो गया।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने नवा रायपुर में निर्माणाधीन नवीन विधानसभा भवन के प्रगति की समीक्षा की

- विस अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा- विधानसभा भवन का निर्माण आने वाली पीढ़ियों को ध्यान में रखकर करें
- मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने दिए निर्देश, निर्माण कार्य समय-सीमा में पूरा करें, प्रगति की सतत् समीक्षा हो

रायपुर (विश्व परिवार)। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह और मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज यहाँ अपने निवास कार्यालय में नवा रायपुर में निर्माणाधीन नवीन विधानसभा भवन, विधायक विश्रामगृह एवं विधानसभा के अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए बन रहे आवासों की प्रगति की समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने बैठक में कहा कि निर्माण कार्य अच्छी गुणवत्ता के साथ समय-सीमा में पूर्ण करें। समय-समय पर प्रगति की समीक्षा की जाए। बैठक में उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव, संसदीय कार्य मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल, वित्त मंत्री श्री ओ. पी. चौधरी, मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन भी उपस्थित थे।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने बैठक में कहा कि विधानसभा भवन का निर्माण आने वाली पीढ़ियों को ध्यान में रखकर किया जाना है। हमारा प्रयास यह हो कि पूरा विधानसभा सौर ऊर्जा से संचालित हो। यह पूरे देश के लिए एक उदाहरण बने। उन्होंने कहा कि पूरा परिसर हरित वातावरण से सुसज्जित हो इसलिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। उन्होंने परिसर में बागवानी के पौधों के अलावा छत्तीसगढ़ के मुख्य वृक्षों महुआ, कुसुम, साल और सागौन जैसे वृक्षों का रोपण किया जाए। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सिंह ने रेन वाटर हार्वेस्टिंग के साथ ही ऐसी व्यवस्था अपनाने की बात कही जिससे पानी का पुन: उपयोग सिंचाई में भी किया जा सके। उन्होंने परिसर में एक प्राकृतिक तालाब भी निर्मित करने की बात कही जिससे पानी की उपलब्धता बनी रहे। निर्माण कार्य में तीव्रता और कसावट लाने के लिए अध्यक्ष डॉ. सिंह ने मुख्य सचिव को प्रति माह बैठक आयोजित कर समीक्षा करने की भी बात कही। संसदीय कार्य मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि निर्माण में उच्च एवं आधुनिक गुणवत्ता के सामान का उपयोग करें। यह विधानसभा देश भर में अनूठा बने इसका ध्यान रखते हुए निर्माण करें क्योंकि देश भर से लोग विधानसभा भ्रमण के लिए आते हैं। यह छत्तीसगढ़ की बड़ी पंचायत है तो इसकी छटा पूरे देश में दिखाई पड़नी चाहिए।

मुख्य सचिव अमिताभ जैन, मुख्यमंत्री के सचिव पी. दयानंद, विधानसभा सचिव दिनेश शर्मा, लोक निर्माण विभाग के सचिव डॉ. कमलप्रीत सिंह, वित्त सचिव रजत बंसल, वन एवं पर्यावरण सचिव श्रीमती संगीता आर. सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

विश्व रक्तदाता दिवस पर जिला अस्पताल में होगा ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर 14 जून को रक्तदान हेतु जिला अस्पताल बलौदाबाजार में ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में जानकारी देते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ एम पी महिस्वर ने बताया की कैंप का आयोजन सुबह 10ः00 बजे से शाम 4ः00 बजे तक किया गया। उन्होंने कहा की वह पुरुष अथवा महिला जिनकी आयु 18 से 65 वर्ष के बीच है तथा जिनका वजन 45 किलो या इससे अधिक हो साथ ही हिमोग्लोबिन कम से कम 12.5 ग्राम प्रति 100 मिली हो वह रक्तदान कर सकते हैं। रक्तदान के संबंध में जिला चिकित्सालय के सिविल सर्जन डॉ राजेश कुमार अवस्थी के अनुसार रक्तदान एक बड़ी समाज सेवा है। एक पुरुष अथवा महिला के रक्तदान करने पर चार मरीजों की जान बचाई जा सकती है। वर्ष में कोई स्वस्थ व्यक्ति चार बार रक्तदान कर सकता है। हमारे शरीर में लगभग 5 लीटर रक्त होता है तथा एक समय में मात्र 350 मिली रक्त ही निकाला जाता है। रक्तदान करने से कोई भी शारीरिक कमजोरी नहीं आती बल्कि हमारा शरीर पुन: रक्त बना लेता है। रक्त की आवश्यकता सिकल सेल एनीमिया थैलेसीमिया हिमोफीलिया दुर्घटनाओं में तथा अन्य बीमारियों के मरीजों को होती हैं। उक्त रक्तदान शिविर ब्लड बैंक के प्रभारी पैथोलॉजिस्ट डॉ अशोक कुमार वर्मा की देखरेख में होगा।

मत्स्य कृषक सहकारी समिति के संचालक मण्डल के निर्वाचन के लिए कार्यक्रम तय

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिले मे संचालित मत्स्य कृषि सहकारी समिति के संचालक मण्डल के निर्वाचन कार्यक्रम रिटर्निंग अधिकारी द्वारा निर्धारित कर दी गई है/ रिटर्निंग अधिकारी एवं वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक से प्राप्त जानकारी के अनुसार मत्स्य कृषक सहकारी समिति मर्यादित पलारी के सनचलक मण्डल के निर्वाचन हेतु नियोजन पत्र प्राप्ति 20 जून तक, नियोजन पत्रों की जांच एवं नाम वापसी 22 जून, चुनाव तैयारी 23 जून, पोलिंग दल का पोलिंग हेतु पहुंचना 28 जून, आमसभा, मतदान, मतगणना, प्रतिनिधियों के निर्वाचन हेतु बैठक की सुचना 29जून, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं प्रतिनिधियों का निर्वाचन 1 जुलाई 2024 निर्धारित किया गया है इसीप्रकार महादेव बुनकर सहकारी समिति मर्यादित सिमगा के संचालक मण्डल के निर्वाचन हेतु 19 जून 2024 तक नियोजन पत्र प्राप्त करेंगे, नियोजन पत्रों की जांच 20 जून, नाम वापसी, प्रतिक चिन्हो का आबंटन, चुनाव तैयारी 21 जून, पोलिंग दल का पोलिंग हेतु पहुंचना 27जून, आमसभा, मतदान, मतगणना, प्रतिनिधियों के निर्वाचन हेतु बैठक की सुचना 28जून, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं प्रतिनिधियों का निर्वाचन 30 जून 2024 निर्धारित किया गया है। बाबादेव मत्स्य सहकारी समिति मर्यादित रावन विकासखंड सिमगा हेतु नियोजन पत्र प्राप्ति 18 जून 2024, नियोजन पत्रों की जांच 20 जून, नाम वापसी, प्रतिक चिन्हो का आबंटन, चुनाव तैयारी 21 जून, पोलिंग दल का पोलिंग हेतु पहुंचना 25जून, आमसभा, मतदान, मतगणना, प्रतिनिधियों के निर्वाचन हेतु बैठक की सुचना 26जून, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं प्रतिनिधियों का निर्वाचन 28जून 2024 निर्धारित किया गया है।

बी.एस. ग्रेगरी का निधन

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री बी.एस. ग्रेगरी (84 वर्ष), सूरज रोड लाईन्स के बाजू, कोटा निवासी सेवानिवृत्त सीएसईबी कर्मचारी का मंगलवार 11 जून 2024 को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार बुधवार 12.06.2024 को क्रिश्चियन कब्रिस्तान जरवाय में किया गया। वे श्रीमती विजेता लुईस के पिताजी थे। संपर्क सूत्र- श्री बर्नाड, मो. 9425511066.

रेस्टोरेशन कार्य का जायजा लेने बुधवार की देर रात कलेक्टोरेट पहुंचे कलेक्टर-एसपी

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। संयुक्त जिला कार्यालय में तेज गति से चल रहे रेस्टोरेशन कार्य का जायजा लेने बुधवार देर रात 12 बजे कलेक्टर दीपक सोनी एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल कलेक्टोरेट पहुंचे। उन्होंने परिसर में कार्य कर रहे लोक निर्माण विभाग के मजदूरों से मुलाकत कर उनका हौसला बढ़ाया। साथ ही श्री सोनी ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को रात में मजदूरों की संख्या बढ़ाने एवं मजदूरों के सभी सुविधाओ के भी ख्याल रखने के निर्देश दिए हैं। इस दौरान अच्छे से सभी कार्यो का मॉनिटरिंग हो इसके लिए बलौदाबाजार एसडीएम को 24 घंटे रोटेशन में नायब तहसीलदारों के साथ पटवारियों की भी ड्यूटी लगाने के निर्देश दिए है। कलेक्टर गार्ड रूम में तैनात होम गार्ड के जवान से मिलकर सुरक्षा संबधित जानकारी लिया। इस पर अपर कलेक्टर को तत्काल फोन कर कल से ही होम गार्ड के जवानों की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। श्री सोनी परिसर के चारो तरफ घूमकर अलग अलग सेक्शन में चल रहे कार्यों को भी विस्तृत जायजा लिया है।

इसी तरह वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल ने ड्यूटी में तैनात पुलिस जवानों से मिलकर उनका हालचाल का जायजा लिया। उन्होंने कहा की परिसर में बिना आई कार्ड के रात को किसी अंजान व्यक्ति को प्रवेश करने न देवे। मजदूरों का भी आईडी अवश्य चेक करे.साथ साथ ही मुख्य गेट के साथ ही परिसर के चारों तरफ समय समय पर गश्त करते रहे। निरीक्षण के दौरान बलौदाबाजार एसडीएम बी आर ध्रुव, तहसीलदार राजू पटेल, एसडीओ श्री नायक, नायब तहसीलदार सहित अन्य लोक निर्माण विभागों के कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

कलेक्टर डॉ. सिंह ने स्मार्ट शासकीय उप स्वास्थ्य केंद्र अड़सेना एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बंगोली का निरीक्षण किया

रायपुर (विश्व परिवार)। स्मार्ट शासकीय उप स्वास्थ्य केंद्र अड़सेना एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बंगोली का आज कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान केंद्र में उपलब्ध सुविधाओं एवं चिकित्सक के अलावा केंद्र में पदस्त स्वास्थ्य कर्मचारी के बारे में जानकारी ली। कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने स्मार्ट शा. उप स्वास्थ्य केंद्र अड़सेना में अपना शुगर टेस्ट भी कराया। उन्होंने ने वार्ड में भर्ती मरीज़ों एवं इलाज के लिए आये ग्रामीणों से भी चर्चा कर स्वास्थ्य केंद्र में मिलने वाले सुविधाओं के बारे में जाना। स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ की उपस्थिति, अस्पताल परिसर में साफ सफाई दवाओं की उपलब्धता की जानकारी ली। उन्होंने अस्पताल में आयुष्मान कार्ड से इलाज की सुविधा के बारे में जानकारी ली ।कलेक्टर डॉ. सिंह ने मेडिसिन स्टॉक रजिस्टर व वितरण रजिस्टर की भी जांच की और स्टोर रूम में जाकर दवाओं की एक्सपायरी डेट भी देखी। कलेक्टर ने निर्देशित किया कि किसी भी स्थिति में एक्सपायरी दवाओं का वितरण किसी मरीज़ को ना हो, उन्होंने ऐसी कालातीत दवाओं को अलग रखने और उनका नियमानुसार नष्टिकरण करने के भी निर्देश अस्पताल प्रबंधन को दिये।

श्री अटल सेवा रत्न से सम्मानित हुए दुष्यन्त कुमार

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। विश्व भ्रष्टाचार निरोधक जन परिषद एवं WAC ग्लोबल ह्यूमन राइट्स फाउंडेशन ने 9 जून 2024 को साउथ एवेन्यू इंदौर में देश विदेश के उत्कृष्ट सेवा कार्य जैसे शिक्षा खेल समाजसेवा पत्रकारिता, लेखन कला साहित्य योग चिकित्सा आदि प्रतिभाओं को चयनित कर सम्मानित किया गया। इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम मे छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करने वाले वाले शिक्षक दुष्यंतकुमार वर्मा और डॉ मुन्नालाल देवदास राष्ट्रपति पुरस्कृत शिक्षक को शिक्षा साहित्य कला संस्कृति क्षेत्र में अद्वितीय काम करने हेतु श्री अटल सेवा रत्न से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अतिथि चेयरमेन डायरेक्टर म.प्र. इलेक्ट्रानिक्स डेव्लपमेंट कार्पोरेशन शैतान सिंह पाल, अध्यक्ष इंटरनेशनल पुलिस फोरम इंटर गर्वमेंटल आर्गेनाइजेशन यूएसए प्रतिनिधि डॉ. जसबीर सिंह, काठमांडू नेपाल से फिल्म डायरेक्टर डॉ. डी.आर. उपाध्याय, मुंबई हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता चंद्रशेखर शर्मा के साथ ही सेलीब्रिटी गेस्ट बालीवुड के प्रख्यात अभिनेता विन्दू दारा सिंह एवं रंजीत जी आदि की उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन अभिनेता राहुल चेलानी द्वारा किया गया। सभी का आभार डॉ. विजय डी बजाज द्वारा किया गया।

महापुरुषों की प्रतिमाएं उचित देखरेख के अभाव में हो रही जर्जर, ध्यान नहीं दे रही पालिका

नवापारा-राजिम (विश्व परिवार)। जिन महापुरुषों ने देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया, आज उनकी बदहाल स्थिति देखकर हमें काफी रोना आता है।व्यवसायिक नगरी नवापारा में महापुरुषों व भगवान के नाम पर चौक चौराहों में प्रतिमाएं स्थापित की गई है, जिसे नगरवासियों ने काफी सराहा था। मगर आज इन चौक चौराहों में प्रतिमाओं की देखरेख ठीक ढंग से नहीं होने के कारण इनकी सुन्दरता समाप्त होती जा रही है. कहीं झरने सूखे पड़े हुए हैं, कहीं लाइट नहीं जल रही है, तो कहीं सामने में ठेले-खोमचे वालों ने कब्जा जमा रखा है। जिससे एक ओर इन महापुरुषों का अपमान हो रहा है। इसे देख लोगों में आक्रोश भी पनप रहा है। नगर पालिका प्रशासन व्दारा करोड़ों रुपए खर्च कर जो सुंदरता नगर के चौक चौराहों की की गई है उसका कोई औचित्य नहीं रह जाता।विदित हो कि विगत साढ़े चार साल में नगर पालिका परिषद गोबरा नवापारा द्वारा स्मृति स्थल और चौक चौराहों को बहुत ही सुन्दर बनाया गया था। नगर के नए बस स्टैड के पास सुभाष चौक में आजादी के दीवाने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आदमकद प्रतिमा लगाई गई है। वहीं बस स्टैंड में लौह महिला भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की आदमकद प्रतिमा स्थापित है। नगर के गुलाब गार्डन के पास रायपुर रोड में राजीव गांधी स्मृति स्थल, नेहरू घाट में नेहरू स्मृति स्थल के साथ साथ विभिन्न चौक का निर्माण कार्य किया गया। महापुरुषों व भगवान को अंधेरे में रखा गया है।

बिलासपुर रेल मंडल के कोतरलिया रेलवे स्टेशन को राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम तलाईपल्ली माइंस लाइन से जोड़ने का कार्य, कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित

रायपुर (विश्व परिवार)। रेलवे प्रशासन द्वारा अधोसंरचना विकास हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर मंडल के कोतरलिया रेलवे स्टेशन के डाउन ग्रिड को राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (NTPC) तलाईपल्ली माइंस लाइन से जोड़ने का कार्य किया जाएगा। इस कार्य के लिए नॉन इंटरलॉकिंग का कार्य किया जाएगा। यह नॉन इंटरलॉकिंग का कार्य दिनांक 22 से 30 जून, 2024 तक किया जा रहा है। इस कार्य के फलस्वरुप कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा। जिसकी जानकारी इस प्रकार-

रद्द होने वाली गाडियां- दिनांक 25 से 30 जून, 2024 तक रायगढ़ से चलने वाली 08737 रायगढ़-बिलासपुर मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 25 से 30 जून, 2024 तक बिलासपुर से चलने वाली 08738 बिलासपुर-रायगढ़ मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 24 से 29 जून, 2024 तक बिलासपुर से चलने वाली 08736 बिलासपुर-रायगढ़ मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 25 से 30 जून, 2024 तक रायगढ़ से चलने वाली 08735 रायगढ़-बिलासपुर मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 24 से 29 जून, 2024 तक टाटानगर से चलने वाली 18113 टाटानगर-बिलासपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 25 से 30 जून, 2024 तक बिलासपुर से चलने वाली 18114 बिलासपुर-टाटानगर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 25 से 30 जून, 2024 तक टाटानगर से चलने वाली 18109 टाटानगर-नेता सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 25 से 30 जून, 2024 तक नेता सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) से चलने वाली 18110 सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) -टाटानगर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 26 जून, 2024 को संतरागाछी से चलने वाली 20828 संतरागाछी-जबलपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 27 जून, 2024 को जबलपुर से चलने वाली 20827 जबलपुर-संतरागाछी एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 25 एवं 29 जून, 2024 को सिकंदराबाद से चलने वाली 17007 सिकंदराबाद-दरभंगा एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 28 जून एवं 02 जुलाई, 2024 को दरभंगा से चलने वाली 17008 दरभंगा-सिकंदराबाद एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 29 जून, 2024 को संतरागाछी से चलने वाली 20822 संतरागाछी-पुणे एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 01 जुलाई, 2024 को पुणे से चलने वाली 20821 पुणे-संतरागाछी-पुणे एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 24 एवं 27 जून, 2024 को भुवनेश्वर से चलने वाली 12880 भुवनेश्वर-कुर्ला एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 26 एवं 29 जून, 2024 को कुर्ला से चलने वाली 12879 कुर्ला-भुवनेश्वर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 28 जून, 2024 को बिलासपुर से चलने वाली 22843 बिलासपुर-पटना एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 30 जून, 2024 को पटना से चलने वाली 22844 पटना-बिलासपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 25 से 30 जून, 2024 तक हावड़ा से चलने वाली 12130 हावड़ा-पुणे आजाद हिन्द एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 27 जून से 02 जुलाई, 2024 तक पुणे से चलने वाली 12129 पुणे-हावड़ा आजाद हिन्द एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 24, 25, 28 एवं 29 जून, 2024 को एलटीटी से चलने वाली 12101 एलटीटी-शालीमार सुपर डिलेक्स एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 26, 27, 30 जून एवं 01 जुलाई, 2024 तक शालीमार से चलने वाली 12102 शालीमार -एलटीटी सुपर डिलेक्स एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

बीच समाप्त होने वाली गाड़ी- दिनांक 25 से 30 जून, 2024 तक गोंदिया एवं झारसुगुड़ा से चलने वाली 08861/ 08862 गोंदिया-झारसुगुड़ा-गोंदिया मेमू पैसेंजर स्पेशल बिलासपुर एवं झारसुगुड़ा के बीच रद्द रहेगी।

देरी से रवाना होने वाली गाड़ियां- दिनांक 24 एवं 25 जून, 2024 को योगनगरी ऋषिकेश से चलने वाली 18478 योगनगरी ऋषिकेश-पूरी उत्कल एक्सप्रेस 03 घंटे 30 मिनिट देरी से रवाना होगी। 26 जून, 2024 को पूरी से चलने वाली 18477 पूरी-योगनगरी ऋषिकेश उत्कल एक्सप्रेस 03 घंटे 30 मिनिट देरी से रवाना होगी। 25 एवं 26 जून, 2024 को दुर्ग से चलने वाली 13287 दुर्ग-आरा साउथ बिहार एक्सप्रेस 03 घंटे 30 मिनिट देरी से रवाना होगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली गाडियां- दिनांक 24 से 29 जून, 2024 तक हावड़ा से चलने वाली 12860 हावड़ा-मुंबई गीतांजली एक्सप्रेस परिवर्तित झारसुगुड़ा-टिटलागढ़-रायपुर होकर चलेगी। 26 जून से 01 जुलाई, 2024 तक मुंबई से चलने वाली 12859 मुंबई-हावड़ा गीतांजली एक्सप्रेस परिवर्तित रायपुर-टिटलागढ़-झारसुगुड़ा होकर चलेगी। 26 जून एवं 27 जून, 2024 को पोरबंदर से चलने वाली 12905 पोरबंदर-शालीमार एक्सप्रेस परिवर्तित रायपुर-टिटलागढ़-झारसुगुड़ा होकर चलेगी। 28 जून एवं 29 जून, 2024 को शालीमार से चलने वाली 12906 शालीमार-पोरबंदर एक्सप्रेस परिवर्तित झारसुगुड़ा-टिटलागढ़-रायपुर होकर चलेगी। 24 जून एवं 28 जून, 2024 को हटिया से चलने वाली 22846 हटिया-पुणे एक्सप्रेस परिवर्तित झारसुगुड़ा-टिटलागढ़-रायपुर होकर चलेगी। दिनांक 26 एवं 30 जून, 2024 को पुणे से चलने वाली 22845 पुणे-हटिया एक्सप्रेस परिवर्तित रायपुर-टिटलागढ़-झारसुगुड़ा होकर चलेगी।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार, रायपुर (छ.ग.) फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा दीनदयाल आवास योजनांतर्गत **सेजबहार,** रायपुर में **भवन क्रमांक- एल.आई.जी.-309, श्री कमल राम साहू पिता स्व. श्री बी.आर. साहू,** पता- 203/के, साहू किराना बोरिया रोड, संतोषी नगर, रायपुर (छ.ग.) के नाम पर भवन 30 वर्ष के लीज में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल के आदेश **क्र.-5664** दिनांक **28.10.2006** द्वारा आबंटित है, उक्त भवन को फ्री-होल्ड के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। जिनका **फ्री-होल्ड** संपरिवर्तन किया जाना हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तीय संस्था, को भवन का **फ्री-होल्ड** किये जाने में किसी प्रकार का कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, मौल श्री विहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय राजस्व निरीक्षक मण्डल रायपुर-2 तहसील रायपुर जिला रायपुर

-:: आम सूचना ::-

------0000------

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि **ग्राम टाटीबंध** प0ह0नं0-**54** रा0नि0म0 रायपुर- 2, तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.) स्थित भूमि के संबंध में आवेदक **पारस राम लालवानी, पिता/पति थावरदास लालवानी**, निवासी- डी.-203, अविनाश आशियाना फेस-4 कबीर नगर रायपुर के द्वारा धारित भूमिस्वामी हक की भूमि खसरा 101/37, रकबा 0.0065 हे. का सीमांकन हेतु आवेदन न्यायालय तहसीलदार रायपुर के समक्ष प्रस्तुत किये जाने के उपरान्त न्यायालय अति. तहसीलदार 01, रायपुर के रा0प्र0क्र0 /--/अ-12/ वर्ष /2023-24 आदेश दिनांक **03/06/2024** के परिपालन में दिनांक **14/06/2024** को 01:00 पूर्वाहन/ पश्चात किया जाना नियत है। अतएव उक्त भूमि के सभी बंटाकनधारी भूमिस्वामियों को सूचना दी जाती है कि उक्त तिथि व समय पर हल्का पटवारी कार्यालय में उपस्थित होकर उक्त खसरा नंबर के संबध में जो भी उजर, दावा अथवा आपत्ति हो तो समक्ष प्रस्तुत करें। आपकी अनुपस्थिति में सीमांकन कार्य किया जा सकता है। सीमांकन उपरांत किसी प्रकार की कोई आपत्ति मान्य नहीं होगा।

सो सूचना जाने।

राजस्व निरीक्षक
मुहर **रा.नि.म.-रायपुर-2 हीरापुर**
तह.-जिला- रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा अटल आवास योजना **बेलभाठा, अभनपुर,** रायपुर में निर्मित **स्वतंत्र भवन क्रमांक-99, श्री पवन कुमार साहू पिता श्री दया राम साहू** के नाम पर इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्रमांक-**4693** दिनांक **01.11.2008** के माध्यम से आबंटित है। आबंटी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में दिनांक **01.09.2009** को लीज-डीड पंजीकृत उपरांत दिनांक **15.10.2015** को हस्तांतरण विलेख **(फ्री-होल्ड)** निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण-विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को **श्री भागवत राम साहू पिता स्व. श्री अघनू राम साहू,** निवासी- वार्ड नं.-08, ग्राम- चिंवरी, पो. सिर्री, तहसील- कुरूद, जिला- धमतरी (छ.ग.) के पक्ष में दिनांक **31.03.2016** को विक्रय-विलेख के माध्यम से विक्रय कर दिया गया है। **क्रेता श्री भागवत राम साहू, पिता स्व. श्री अघनू राम साहू** द्वारा उक्त भवन को **फ्री-होल्ड** पश्चात् अपने नाम पर मण्डल के अभिलेखों में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन का **फ्री-होल्ड** उपरांत मण्डल के अभिलेखों में नाम दर्ज करने के संबंध में किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनान्तर्गत **इंद्रावती कालोनी, राजा तालाब,** रायपुर में स्थित **फ्लैट क्र.- एल.आई.जी.-01, श्री रेशम लाल जांगड़े पिता स्व. टीकाराम जांगड़े,** के नाम पर इस कार्यालय के आबंटन आदेश **क्रमांक**-12699 दिनांक **24.10.1974** के माध्यम से आबंटित किया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री रेशम लाल जांगड़े पिता स्व. टीकाराम जांगड़े,** की मृत्यु दिनांक **11.08.2014** को हो जाने के कारण उनके पुत्र **श्री हेमचंद्र जांगड़े पिता स्व. रेशम लाल जांगड़े** के द्वारा अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु निर्धारित आवेदन पत्र, शपथ पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, अन्य वारिसानों का सहमति पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उपरोक्त फ्लैट को आबंटी **श्री रेशम लाल जांगड़े पिता स्व. टीकाराम जांगड़े,** की मृत्यु होने के उपरांत उनके पुत्र **श्री हेमचंद्र जांगड़े पिता स्व. रेशम लाल जांगड़े,** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

अत: उक्त फ्लैट के नामांतरण के संबंध में किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com, Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 155, दिनांक 12.06.2024
वार्ड का नाम- सुभाष चन्द्र बोस वार्ड
वार्ड क्र. 35 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **35** मांग **पंजी क्र. 264 युआईडी 29163** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **प्रमिला गोस्वामी/ दशरथ गोस्वामी** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **डोमार सिंह सिन्हा/ सेतराम सिन्हा** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **12-07-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com, Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 156, दिनांक 12.06.2024
वार्ड का नाम- महात्मा गांधी वार्ड
वार्ड क्र. 32 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **32** मांग **पंजी क्र. 166 युआईडी 27709** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **नीलकंठ देवांगन/ शिवराम देवांगन** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **डॉ. नंदकुमार देवांगन/ कन्हैया लाल देवांगन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **12-07-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com, Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 157, दिनांक 12.06.2024
वार्ड का नाम- महात्मा गांधी वार्ड
वार्ड क्र. 32 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **32** मांग **पंजी क्र. 490 युआईडी 28033** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **जेठूराम, आशाराम, भुखाऊ/ मरहू राम देवांगन** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **रमेश देवांगन/ आशाराम देवांगन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **12-07-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com, Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 158, दिनांक 13.06.2024
वार्ड का नाम- शहीद चन्द्रशेखर आजार वार्ड
वार्ड क्र. 31 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **31** मांग **पंजी क्र. 262 युआईडी 27431** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **गोपाल देवांगन/ खेदूराम देवांगन** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **अशोक देवांगन/ रामप्रसाद देवांगन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **13-07-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com, Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 159, दिनांक 13.06.2024
वार्ड का नाम- सुन्दर लाल शर्मा वार्ड
वार्ड क्र. 20 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **20** मांग **पंजी क्र. 38 युआईडी 21927** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **डी.एम. बिल्डर्स/ परेश कुमार मानिक** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सुनीता प्रसाद/ नरेश प्रसाद** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **13-07-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com, Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 160, दिनांक 13.06.2024
वार्ड का नाम- सुन्दर लाल शर्मा वार्ड
वार्ड क्र. 20 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **20** मांग **पंजी क्र. 38 युआईडी 21927** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **डी.एम. बिल्डर्स/ परेश कुमार मानिक** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **अजय कुमार/ त्रिलोकी नाथ ओझा** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **13-07-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शुक्रवार 14 जून 2024

उद्योग नहीं लगाने वाले उद्योगपतियों को आबंटित जमीन करें निरस्त : उद्योग मंत्री

उद्योग मंत्री देवांगन ने ली मैराथन बैठक, विभाग की योजनाओं की समीक्षा की

कोरबा(विश्व परिवार)। उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन ने मंगलवार को उद्योग विभाग की एक-एक योजना की विस्तार से समीक्षा की। बैठक के दौरान उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि उद्योग स्थापना के नाम पर जमीन लेने के बाद भी उद्योग नहीं लगाने वाले उद्योगपतियों को नोटिस जारी कर जमीन आबंटन की प्रक्रिया निरस्त करने की कार्रवाई करें। मंगलवार को सर्किट हाऊस रायपुर में प्रदेश के सभी जिलों के उद्योग और व्यापार केंद्र के प्रबंधकों, सीएसआइडीसी के अधिकारीयों व उद्योग संचालनालय के उच्च अधिकारियों की बैठक लेकर उद्योग मंत्री देवांगन ने इस आशय के निर्देश दिए। बैठक में उद्योग विभाग के सचिव अंकित आनंद, संचालक उद्योग पी अरूण प्रसाद सहित जिलों से आए अधिकारी एवं उद्योग संचालनालय के अधिकारी उपस्थित थे। उद्योग मंत्री देवांगन ने निर्देश देते हुए कहा कि चुनाव के आदर्श आरचण संहिता के दौरान जो कार्य लंबित थे, उसे प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूर्ण करने की कार्यवाही करें। मंत्री ने औद्योगिक दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए वाष्पयंत्र निरीक्षकालय की समीक्षा के दौरान कहा कि अधिकारीगण समय-समय पर बायलर का निरीक्षण करते रहें। विभाग के योजनाओ में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना के तहत 2023द्24 में 1024 लक्ष्य की तुलना में अब तक 1252 प्रकरणों को स्वीकृत किया गया। मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के तहत 600 लक्ष्य की तुलना में 1129 आवेदन स्वीकृत किए गए। प्रधानमंत्री विश्वकर्मा कौशल योजना के तहत अब तक एमएसएमई रायपुर द्वारा अब तक 10798 लोगों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है। इस कार्य में मंत्री देवांगन ने तेजी लाने के निर्देश दिए गए। भू आबंटन के 758 प्रकरणों को स्वीकृत किया गया, 30 पेंडिंग मामलों को भी जल्द निराकरण करने के निर्देश दिए गए। मंत्री देवांगन ने कहा की देश के प्रधानमंत्री जिन्होंने हाल ही में तीसरी बार प्रधानमंत्री का पदभार ग्रहण किया है। वे भी चाहते है कि युवाओं को अधिक से अधिक काम मिले जिससे उनके जीवन स्तर में बदलाव आ सके। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की भी मंशा है की अलग अलग सेक्टर में ज्यादा से ज्यादा उद्योग लगें ताकि रोजगार के अवसर सृजित हों सके। उद्योग मंत्री ने इसके अलावा उन्होंने प्रधानमंत्री फार्मलाइजेशन आफ माइक्रो फूड प्रोसेसिंग इंटरप्राइजेस (पीएमएफएमई) योजना, विभिन्न अनुदान, छूट एवं रियायतों के प्रकरणों की प्रगति की समीक्षा की। इसके अलावा भूमि आवंटन संबंधी प्रकरणों की समीक्षा की और फ्री-होल्ड संबंधी प्राप्त आवेदन पत्रों के निराकरण, उद्योंगों के लिए किए गए एमओयू की प्रगति, अधोसंरचना विकास कार्य, राज्य निवेश प्रोत्साहन बोर्ड के कार्यों, वाष्पयंत्र निरीक्षणालय कार्यों, पंजीयक फार्म एवं संस्थाएं की समीक्षा की गई।

संक्षिप्त समाचार

खोलार नदी रेल्वे पुल के पास एक बच्चे का मिला तैरता शव

कोरबा(विश्व परिवार)। प्रेम नगर के खोलार नदी में रेल्वे पुल के पास एक बच्चे का शव दिखाई दिया। खबर मोहल्ले में फैलते ही लोगों की भीड़ लग गई। जीवित होने की आशंका पर बच्चे को नदी से निकाला गया, पर तब तक उसकी मृत्यु हो चुकी थी। बच्चे की शिनाख्त एसईसीएल ढेलवाडीह में पदस्थ आनंद राम के पुत्र संजय कुमार 14 वर्ष के रुप में की गई। सूचना मिलने पर मौके पर टीआई रूपक शर्मा की अगुवाई में पहुंची कुसमुंडा पुलिस ने वैधानिक कार्रवाई के बाद पहले बच्चे को लेकर विकास नगर अस्पताल पहुंचे, पर डाक्टरों द्वारा जांच के बाद मृत घोषित किए जाने पर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। ग्रामीणों ने बताया कि बच्चे की मानसिक स्थिति कमजोर थी, संभवतरू नदी में नहाते वक्त वह डूब गया। घटना के वक्त आनंदराम ड्यूटी पर थे। लोगों ने उन्हें जानकारी दी, तब स्थल पर पहुंचे। हालांकि यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि बच्चा, नाला पास कब व कैसे पहुंचा और पानी में कब डूब गया। बहरहाल मामले में पुलिस अपने स्तर पर जांच कर रही है।

सड़क किनारे घायल युवक की उपचार के दौरान मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। ग्राम सोनपुरी मुख्य मार्ग पर सोमवार की देर शाम हुए एक दुर्घटना में एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया था, पर उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। उसकी शिनाख्त अनूप दुबे 26 वर्ष के रूप में बड़े भाई अजय दुबे ने अस्पताल की मर्च्यूरी पहुंचकर पहचान की। बताया जा रहा है कि बालको मुख्य पर सोमवार की शाम एक युवक घायल अवस्था में सड़क किनारे गिरे हुए राहगीरों ने देखा, तब डायल 112 के माध्यम से जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां सिर और हाथ में गंभीर चोट लगने के कारण इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। घटनाक्रम की जानकारी मिलने पर उसके स्वजन ने पहचान करते हुए बताया कि मृतक अनूप दुबे मूलत दर्री जमनीपाली के ग्राम सेमीपाली का रहने वाला था। बड़े भाई अजय दुबे ने बताया कि अनूप शाम चार बजे घूमने के लिए निकला था, पर वापस नहीं लौटा। रात होने के बाद उसकी खोजबीन की गई। लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। सुबह एक फोन आया कि उसके भाई दुर्घटना में घायल हो गया है। जब वह मौके पर पहुंचे तो उसकी मृत्यु हो चुकी थी। मृतक ड्राइवर था और एक निजी वाहन चलाया करता था। वह बालको कब कैसे और किन परिस्थितियों में पहुंचा है। यह स्वजनों के भी समझ से परे है। जिला अस्पताल चैकी प्रभारी ने बताया कि जिला अस्पताल से मिले मेमू के आधार पर मृतक के स्वजनों का बयान दर्ज किया गया है। जांच के लिए संबंधित थाने को भेजा जाएगा।

बकरीद को लेकर ली गई शांति समिति की बैठक

सूरजपुर(विश्व परिवार)। संयुक्त जिला कार्यालय के सभाकक्ष में आज कलेक्टर श्री रोहित व्यास की अध्यक्षता एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री एम.आर. अहिरे की उपस्थिति में बकरीद के पूर्व शांति समिति की बैठक रखी गई थी। जिसमें जिले के विभिन्न वर्ग से आये गणमान्य नागरिकों ने बकरीद का पर्व शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो इसके लिए अपने विचार प्रस्तुत किये। कलेक्टर रोहित व्यास एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एम.आर. अहिरे द्वारा बकरीद के दिन पर्व की रूप रेखा के संबंध में उपस्थितजनों के साथ सामान्य चर्चा की गई, इसके साथ ही शाति व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। बैठक में उक्त दिवस हेतु पानी, बिजली एवं सफाई व्यवस्था के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इस अवसर पर बैठक में ओमकार पांडे, श्री नरेश राजवाड़े (जिला पंचायत उपाध्यक्ष) व जिले के अन्य गणमान्य नागरिक, अपर कलेक्टर श्रीमती नयनतारा सिंह तोमर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

हथनेवरा चौक के पास बिगड़ा ट्रक, आवागमन रहा बाधित

जांजगीर-चांपा(विश्व परिवार)। चांपा-बिर्रा मार्ग में हथनेवरा टू-लेन चौक के पास सोमवार की बीती रात्रि को एक ट्रक खराब हो गया। जिसके कारण इस चौक से लोगों का आवाजाही में परेशानी होती रही। चूंकि पूरी रात भर यह वाहन चौक पर खड़े रहे जिसके कारण लोग काफी परेशान रहे। मंगलवार को सुबह 10 बजे तक यह वाहन चौक पर खड़ी रही। वाहन चालक ने बताया कि गाड़ी में तकनीकी खराबी आने के कारण स्टार्ट नहीं हो रही है। चूंकि स्टेयरिंग भी पॉवर स्टेयरिंग होने के कारण जब तक यह स्टार्ट नही होगा तब तक इसे आगे भी ले जाया नहीं जा सकता है।

पुलिस एक्टिव मोड पर, नशेड़ी चालकों पर पुलिस ने की 185 की कार्रवाई

अंकुश लगाने के लिए लगातार अभियान

कोरबा(विश्व परिवार)। सडक हादसों के पीछे के कारणों को जानने और उनमें आवश्यक कार्रवाई करने के लिए पुलिस एक्टिव मोड पर है। सभी तरफ इसे लेकर कार्रवाई की जा रही है। कटघोरा पुलिस ने छुरी क्षेत्र में इस अभियान पर काम किया। 6 वाहन चालक नशे की स्थिति में मिले। उन पर धारा 185 की कार्रवाई की गई। प्रत्येक मामले में संबंधितों को 10 हजार की पेनाल्टी अदा करनी होगी। कटघोरा थाना क्षेत्र के अंतर्गत छुरी धनरास मोड़ पर पुलिस के द्वारा नाकाबंदी करने के साथ विशेष अभियान को चलाया गया। पुलिस की टीम ने थाना प्रभारी धर्मनारायण तिवारी के नेतृत्व में वाहनों को रूकवाकर जांच की। चालकों की स्थिति को जानने के लिए एल्कोमीटर का उपयोग किया गया। इस दौरान एक जेसीबी चालक, दो ट्रैक्टर चालक और तीन दोपहिया चालक शराब के नशे में पाए गए। जांच करने पर इन मामलों में शराब का स्तर निर्धारित पैरामीटर से अधिक पाया गया। इसे यातायात नियमों का उल्लंघन मानते हुए पुलिस ने चालकों के विरूद्ध मोटर व्हीकल एक्ट की धारा 185 के अंतर्गत प्रकरण दर्ज किया। इन गाडियों को जब्त करने की कार्रवाई की गई है।

कलेक्टर आकाश छिकारा से उद्योग संघ का प्रतिनिधि मंडल सौजन्य मुलाकात की

चांपा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज की स्थानीय इकाई तथा जिला उद्योग संघ के एक संयुक्त प्रतिनिधि मंडल ने सोमवार 10 जून को सायं 6 बजे कलेक्ट्रेट स्थित कार्यालय में जिलाधीश आकाश छिकारा से मुलाकात की। उद्योग संघ एवं चेम्बर ऑफकामर्स के प्रतिनिधियों ने कलेक्टर से जिले में संचालित उद्योगो के बारे में झूठी, निराधार तथा भ्रामक शिकायते करने वालो के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही किये जाने की मांग की। इस पर कलेक्टर ने ऐसे तत्त्वो के विरूद्ध आवश्यक जांच करा कर नियमानुसार दंडात्मक कार्यवाही किये जाने का आश्वासन प्रतिनिधिमंडल को दिया। जिला उद्योग संघ जांजगीर चांपा के अध्यक्ष सज्जन अग्रवाल ने बताया कि क्षेत्र में इन दिनों ऐसे तत्व कार्यरत है जो आये दिन संचालित उद्योगो के संबंध में झूठी, निराधार और भ्रामक शिकायते करते रहते है। इस तरह की निराधार शिकायतो से उद्योग संचालको को सुचारू रूप से अपना उद्योग संचालित करने में परेशानी होती है। साथ ही इससे संबंधित विभाग का प्रशासनिक अमले का भी बेवहज की शिकायतो की जांच में अनावश्यक समय भी व्यतीत होता है। उद्योग संघ एवं चेम्बर ऑफकामर्स के प्रतिनिधिमंडल ने कलेक्टर से इस तरह की झूठी, निराधार तथा भ्रामक शिकायते करने वालो के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही किये जाने की मांग की। इस पर कलेक्टर आकाश छिकारा ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि यदि शिकायते झूठी व निराधार पाई गयी तो संबंधित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

जटगा रेंज में दिखा बायसन वन विभाग हुआ सक्रिय

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले के कटघोरा वनमंडल अंतर्गत जटगा रेंज में मंगलवार को बायसन (वनभैंसा) देखे जाने के बाद वन विभाग सक्रिय हो गया है। अब विभाग द्वारा यह पता लगाया जा रहा है कि क्षेत्र के जंगल में वन भैंसा का आगमन कहा से हुआ है इसके साथ और भी वन भैंसे है। अथवा अकेला ही पहुंचा है हालांकि यह माना जा रहा है कि वन भैंसे का अचानक मार क्षेत्र से हुआ होगा। जो पाली व चैतमा के जंगल होते हुए यहां पहुंचा है। इससे पहले पाली के जंगल में काफी दिन पहले बायसन को विचरण करते हुए देखा गया था। तब वन विभाग सक्रिय हुआ था। कुछ दिन यहा के जंगल में दिखाई देने के बाद वन भैंसा कही चला गया था। अब मंगलवार को पुनरू दिखाए देने पर वन विभाग इसका पता लगाने के लिए सक्रिय हो गया है। जानकारी के अनुसार वन विभाग की टीम मंगलवार को दोपहर 12 बजें जटगा रेंज के जंगलो में गश्त के लिए निकली थी। टीम में शामिल विभाग के अधिकारी व कर्मचारी सिंघिया के 10 किलो मीटर आगे पहुंचे थे। कि राजगवालीन मंदिर के पास एनआर क्षेत्र में एक बायसन को विचरण करते हुए देखा और इसकी विडियों व फोटो ग्राफी करने के साथ ही उसे अपनें कैमरे में कैदकर लिया।

लावारिस खड़ी वाहन में शराबखोरी, क्षेत्रवासी परेशान

कोरबा(विश्व परिवार)। ट्रांसपोर्ट नगर इंदिरा कमर्शियल काम्प्लेक्स क्षेत्र में एक स्थान पर मालवाहक लावारिश स्थिति में खड़ा है। मौके पर जमकर गंदगी करने के साथ शराबखोरी की जा रही है। क्षेत्र के लोगों ने इस बारे में सीएसईबी पुलिस को सूचना देने के साथ मामले में जब्ती सहित अन्य कार्रवाई करने की मांग की है। वरिष्ठ अधिकारियों को भी इस बारे में अवगत कराया गया है। टीपी नगर के प्लाट नं.-82 में रहने वाले अश्विन भूटानी ने चैकी प्रभारी को आवेदन दिया है। इसमें बताया गया है कि उनके प्लाट नं. 82 में व्यवसायिक प्रतिष्ठान संचालित है। इसके ठीक सामने ट्रक क्रमांक सीजी-12एजेड़-0646 लावारिस स्थिति में खड़ा है। इसे 4 महीने से अधिक का समय हो गया है। इसके कारण भूटानी को कामकाज में परेशानी हो रही है। पुलिस को जानकारी दी गई है कि मालवाहक के इस तरह खड़े होने से अराजक तत्वों को कई प्रकार से सहूलियत मिल रही है।

उन्होंने मौके पर गंदगी करना शुरू कर दिया है। इसके अलावा रात्रि को यहां शराबखोरी भी की जा रही है। एक-दो मौके पर कुछ लोगों को पकडने के साथ नसीहत दी गई तो उन्होंने असभ्यता का परिचय दिया। इस प्रकार की घटनाओं से अप्रिय स्थिति निर्मित हो रही है और कभी भी अनहोनी की आशंका भी है। पुलिस से कहा गया है कि वाहन मालिक के नहीं मिलने पर पुलिस को संबंधित वाहन को जब्त करना चाहिए ताकि स्थानीय स्तर पर पेश आ रही समस्याओं से राहत मिल सके। इंदिरा स्टेडियम से सीएसईबी चैक की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग को कई लोगों ने अपने कब्जे में ले लिया है। वहां पर उनके कबाडनुमा वाहन काफी समय से खड़े हैं। इससे सडक सकरी हो गई है और कई प्रकार की परेशानियां भी सामने आ रही है। यही हाल 15 ब्लॉक, एसईसीएल कालोनी दुर्गा मंदिर क्षेत्र का भी है। वहां पर भी ऐसे कई नमूने अरसे से मौजूद हैं।

जिला प्रशासन के दिशा-निर्देश पर बालको ने कराया छात्रों को शैक्षणिक भ्रमण

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले में स्थापित वेदांता समूह की कंपनी भारत एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको) ने जिला प्रशासन के दिशा निर्देशानुसार अपने संयंत्र परिसर और चोटिया कोयला खादान में स्कूल के छात्रछात्राओं को शैक्षणिक भ्रमण कराया। विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि तथा देश के औद्योगिक विकास को व्यापक रूप से समझने के लिए शैक्षणिक भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कोरबा जिलाधिकारी अजीत वसंत के दिशा-निर्देशन में जिले के

विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण कराया गया जिससे बच्चे इंजीनियरिंग व विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को देखकर सीख सकें। लगभग 240 छात्रों ने अलग-अलग दल में बालको का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस तरह के भ्रमण से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक और तकनीकी एवं नवाचार की सोच विकसित होगी। विद्यालय की कक्षा से बाहर जाकर बड़े-बड़े औद्योगिक कार्यस्थल के अवलोकन से शिक्षा के प्रति उनकी अभिरूचि भी बढ़ेगी। कंपनी में आने वाले सभी विद्यार्थियों को पूरे संयंत्र का भ्रमण कराया, जिसमें कंपनी के महत्वपूर्ण कार्यों को विस्तार से बताया गया। छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक संयंत्र प्रतिनिधियों से चर्चा करते हुए प्रचालन की जानकारी को समझने का प्रयास किया। बालको के स्मेल्टर, कास्ट हाउस और विद्युत संयंत्र का अवलोकन कर छात्र बेहद प्रभावित हुए।

तेलारबहर में स्कूल नहीं बंद स्कूल को फिर से शुरू करने की मांग

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जनपद के ग्राम पंचायत डोकरमना के आश्रित ग्राम तेलारबहर में संचालित स्कूल को बीते शैक्षणिक सत्र से बंद कर दिया है। विद्यार्थियो की दाखिल संख्या कम होने का कारण बताते हुए शिक्षा विभाग के इस निर्णय से गांव के 35 विद्यार्थी पढ़ाई से वंचित हो गया है। कलेक्टोरेट पहुंचे गांव के ग्रामीणो ने कलेक्टर अजीत वसंत से स्कूल फिर शुरू कराने की मांग की है। ग्रामीणों ने बताया कि तेलार बहार से डोकरमना की दूरी पांच किलोमीटर है। प्राथमिक शाला के अधिकांश विद्यार्थी प्रतिदिन इतनी लंबी दूरी चल कर स्कूल नहीं जा पाते। गांव में अभी तक स्कूल भवन की सुविधा नहीं है। शिक्षा विभाग की ओर बीते वर्ष स्कूल एक निजी भवन में की गई थी। विद्यार्थियों की संख्या कम होने का कारण बताते हुए शिक्षा विभाग ने स्कूल बंद कर दिया है। गांव में पहुंच मार्ग की भी कमी है। वर्षा काल में विद्यार्थियों को स्कूल जाना बंद हो जाता है। ग्रामीणों का कहना है स्कूल की सुविधा नहीं होने से बच्चे शिक्षा के अधिकार से वंचित है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शुक्रवार 14 जून 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय विपक्ष की गारंटियों के बावजूद एनडीए को बहुमत

मौद्रिक नीति यथावत

भारतीय रिजर्व बैंक ने लगातार आठवीं बार ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है यानी केंद्रीय बैंक ने ब्याज दरों को 6.5 फीसद पर बनाए रखा है। रिजर्व बैंक ने आखिरी बार 4 फरवरी, 2023 को दर 0.25 फीसद बढ़ाकर 6.5 फीसद की थी। सात जून को आरबीआई के गर्वनर शक्तिकांत दास ने मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की तीन दिनी बैठक में लिए गए इस बाबत निर्णय की जानकारी देते हुए ब्याज दरों के यथावत रहने की घोषणा की यानी मकान, वाहन और अन्य कर्ज महंगे नहीं होंगे। समिति के छह में से चार सदस्यों ने ब्याज दरों को यथावत बनाए रखने जबकि दो सदस्यों ने इससे अलग राय जताई थी। दरअसल, आर्थिक वृद्धि दर मजबूत बनी हुई है जबकि मुख्य मुद्रास्फीति में नरमी से खुदरा महंगाई में लगातार कमी आ रही है। ईधन की महंगाई दर में भी कमी जारी है। इसलिए केंद्रीय बैंक के लिए ब्याज दरों को यथावत बनाए रखने में आसानी रही। लेकिन महंगाई की दर के अपेक्षित से ज्यादा बने रहना सरकार के लिए चिंता का सबब अवश्य है और वह महंगाई चार फीसद के मानक स्तर पर लाने के लिए बराबर सतर्कता बरत रही है। उसकी चुनौती इस मोर्चे पर कड़ी है क्योंकि राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के मुताबिक 2023-24 में महंगाई 4.83 फीसद दर्ज की गई जो अपेक्षित स्तर से ऊंची है। इसके निकट भविष्य में नीचे आने की उम्मीद भी नहीं है। अलबत्ता, वर्ष के ज्यादातर समय इसके 4.5 फीसद के आसपास बने रहने का आकलन है। अर्थव्यवस्था की मौजूदा स्थिति में मुद्रास्फीति और आर्थिक वृद्धि की गति के मद्देनजर रिजर्व बैंक पहले ही पूर्वानुमान लगा चुका था कि मुद्रास्फीति 4.5 फीसद के आसपास रहेगी। बाजार का भी यही आकलन था। इस बीच, केंद्र में गठबंधन सरकार शपथ ले चुकी है। भले ही सरकार के रुख को लेकर अनिश्चितता है लेकिन इतना तय है कि सरकार का रुख लचीला रहेगा। वह कुछ डेफिसिट के साथ भी काम चलाना चाहेगी बशत्रे आम जन को सहूलियत मिले। मानसून निकट है, और अच्छा मानसून रहने के अनुमान से भी मौद्रिक मैकेनिज्म से दामों को काबू में रखने का उपाय कारगर माना जाएगा। यही कारण है कि रिजर्व बैंक ने मौद्रिक नीति को यथावत रखने के साथ ही मुद्रास्फीति में कमी लाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई है।

विशेष लेख

वैचारिक मतभेदों को व्यक्त करने का घृणित तरीका....

प्रियंका सौरभ

वैचारिक मतभेदों को व्यक्त करने का घृणित तरीका, खासकर जब आप वर्दी पहने हों। 'शर्मिंदगी और हैरानी इस बात की है कि ये काम सीआईएसएफ की सुरक्षाकर्मी ने किया है जो लोगों की सुरक्षा के लिए होते हैं। क्या ये कंगना के खिलाफ चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर प्लांड अटैक है। सांसद पर चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर हुआ हमला बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है, खासकर एक सुरक्षाकर्मी द्वारा, जिन पर सुरक्षा का जिम्मा होता है। अपनी शिकायत को रखने का और भी सभ्य तरीका होता है।' भारतीय राजनीति और सामाजिक जीवन में हम अक्सर इस तरह की घटनाओं के बारे में सुनते हैं। 'थप्पड़' कहने से हिंसा की गंभीरता कम होती है और हिंसा के शिकार की कमजोरी ज्यादा उजागर होती है। थप्पड़ से किसी की जान नहीं जाती, उसकी निष्कवचता अधिक प्रकट होती है। उसमें किसी योजना की जगह एक प्रकार की स्वतस्स्फूर्तता का तत्व होता है। कहा जा सकता है कि थप्पड़ मारने वाले की मंशा सिर्फ नाराजगी का इजहार होता है। राजनीति और सिस्टम (लोकतंत्र या तानाशाही) में विरोध जायज है और यही विरोध तरह तरह के स्वरूपों में हमारे सामने आता रहता है। थप्पड़ या स्याही हमला भारतीय राजनीति में कोई नया किस्सा नहीं है। पहले भी हमारे नेता इन हमलों का दंश झेलते रहे हैं। इतना ही नहीं कई नेताओं पर जूता उछाले जाने की घटनाएं भी हुई हैं। लोकतंत्र लोगों को विरोध प्रदर्शन की आजादी देता है और लोग विरोध के नए-नए तरीके खोज लाते हैं। कभी विरोध में अंडे, टमाटर फेंके जाते हैं, तो कभी जूते-चप्पल 'कंगना ने किसान आंदोलन के खिलाफ में कुछ बोला तो सीआईएसफ की कांस्टेबल ने आज कंगना पर हमला कर दिया। ये कहां तक उचित है? जो लोग इसे सही ठहरा रहे हैं वे ये समझ लें कि रक्षक को भक्षक नहीं बनना होता है। आपकी व्यक्तिगत सोच और विचारधारा आपकी ड्यूटी के बीच में नहीं आनी चाहिए। देशभर में दर्जनों नेता हैं जो सेना के खिलाफ बोलते आए हैं। कभी सिक्यूरिटी के दौरान किसी सैनिक की भावना उसकी ड्यूटी के बीच आ गई तो ऐसे नेताओं का वहीं हिसाब हो जाएगा। धारा 370, राम मंदिर जैसे मुद्दों पर कई नेताओ और सेलिब्रिटीज़ के घटिया और भद्दे बयान सबके सामने हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ अगर हर सुरक्षाकर्मी सिक्युरिटी के दौरान अपनी भवनाएं दिखाने लगा तो बहुत बड़ी दिक्कत हो जाएगी। मुझे तो ये समझ नहीं आ रहा है कि लोग कैसे इस महिला के एक्ट को जस्टिफाई कर सकते हैं। क्या लोग ये भूल गए कि ऐसे ही दो सुरक्षा कर्मचारियों की भावनाएं उनकी ड्यूटी के बीच आ गई थी जिसकी वजह से इंदिरा गांधी की हत्या हुई। हिंसा की र्भत्सना बिना शर्त जब तक न की जाएगी, जब तक उसके लिए कोई औचित्य तलाशा जाता रहेगा और जब तक वह विचारधारा के आधार पर सही या गलत मानी जाएगी, उसकी पुनरावृत्ति होती रहेगी। संचार माध्यमों द्वारा हिंसा को नयनाभिराम बनाकर अगर उपभोग्य बना दिया गया तो वह फिर बार-बार 'अदा' की जाएगी और अपनी भयावहता भी खो बैठेगी। वह लोकतंत्र का सबसे सबसे खतरनाक क्षण होगा। देश का हर नेता किसी न किसी के बारे में आए दिन जहर उगलता रहता है। अगर हर नेता की बात पर सुरक्षा बलों के जवान इसी तरह रिएक्ट करना शुरू कर दें तो देश की व्यवस्था का क्या होगा? क्या इसको बढ़ावा देना उचित है? क्या कल को और कोई नहीं ऐसे किसी नेता या पब्लिक फिगर पर हाथ उठेगा? क्या गारंटी है कि कल को यही घूम कर सभी के पास आएगा। थप्पड़ मारने को उचित नहीं कहा जा सकता, साथ ही ऐसे गुस्से को भी सुनना तो पड़ेगा, सुनना चाहिए।राजनेताओं को समझना चाहिए कि पीड़ित जनता की भावनाओं के प्रति यदि वे न केवल संवेदनहीन बल्कि क्रूर व अमानवीय रवैया अपनाएंगे तो जनता अपनी हताशा किसी रूप में तो व्यक्त करेगी। किसी को थप्पड़ मारना अपराध है। इस तरह के मामलों में पुलिस आईपीसी के सेक्शन 323 के तहत केस दर्ज करती है। उन्होंने आगे कहा कि आईपीसी के सेक्शन 323 के तहत अगर कोई अपनी इच्छा से किसी को चोट या नुकसान पहुंचाता है, तो ऐसा करने पर उसे 1 साल की जेल हो सकती है। साथ ही 1 हजार रु पये का जुर्माना या दोनों की सजा हो सकती है, लेकिन अगर ये बात सामने आती है कि किसी ने बदसलूकी की और फिर ये घटना हुई तो अदालत सजा को बदल भी सकती है या मामले को ही खारिज कर सकती है। देश का हर नेता किसी न किसी के बारे में आए दिन जहर उगलता रहता है। अगर हर नेता की बात पर सुरक्षा बलों के जवान इसी तरह रिएक्ट करना शुरू कर दें तो देश की व्यवस्था का क्या होगा?

नई सरकार से मजबूत होगी आर्थिकी...

डा. जयंतीलाल भंडारी

चूंकि भारत लगातार चालू खाते के घाटे से जूझ रहा है और भारत को विदेशी बचतों को हासिल करने की जरूरत है, इसलिए एफडीआई भारत में विदेशी बचतों के सबसे टिकाऊ स्त्रोत के रूप में लाभप्रद होगा। भारत की विकास दर के 8.2 प्रतिशत रहने से नई सरकार को व्यय प्रबंधन में मदद मिलेगी चार जून को 18वीं लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अब बनने वाली एनडीए के तीसरे कार्यकाल की नई सरकार देश को आर्थिक विकास की डगर पर तेजी से आगे बढ़ाएगी। निश्चित रूप से देश को एक बेहतर आर्थिक परिवेश के साथ बेहतर मानसून की सौगातें विरासत में मिलते हुए दिखाई दे रही हैं। स्थिति यह है कि देश की बेहतर आर्थिकी के परिप्रेक्ष्य में दुनिया की क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां यह कहते हुए दिखाई दे रही हैं कि भारत में कोई भी सरकार बने, अब आर्थिकी तेज गति से मजबूत होगी। खास बात यह भी है कि 7 जून को एनडीए के संसदीय बोर्ड की बैठक में जिस तरह से गठबंधन के समर्थक नेताओं के द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सराहना दी गई और विकसित भारत के लिए हर तरह का योगदान देने का संकल्प दोहराया गया, उससे निश्चित रूप से देश की अर्थव्यवस्था और तेज गति से आगे बढ़ेगी। उल्लेखनीय कि हाल ही में केंद्रीय सांख्यिकी संगठन ने वर्ष 2023-24 में देश की विकास दर 8.2 फीसदी रहने संबंधी रिपोर्ट जारी की है। वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के मुताबिक आर्थिक व वित्तीय बाजार मजबूत हो रहे हैं। भारत के वित्तीय और गैर वित्तीय क्षेत्रों के दमदार बही-खाते भारत की आर्थिक ताकत बढ़ा रहे हैं। रिजर्व बैंक के द्वारा भारत सरकार को दिया गया रिकॉर्ड लाभांश, वैश्विक आर्थिक संगठनों के द्वारा भारत के विकास के नए-नए प्रभावी विश्लेषण प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन सबके साथ-साथ नई सरकार से देश की अर्थव्यवस्था को नई शक्ति मिलने की संभावनाओं से देश की अर्थव्यवस्था मजबूती के साथ आगे बढने के शुभ संकेत देते हुए दिखाई दे रही है। गौरतलब है कि हाल ही में दुनिया की प्रसिद्ध क्रेडिट रेटिंग एजेंसी एसऐंडपी ने भारत की मजबूत आर्थिक वृद्धि, तेज आर्थिक सुधार और बढ़ती राजकोषीय मजबूती के मद्देनजर भारत की रेटिंग को स्थिर यानी स्टेबल से बदलकर पॉजिटिव कर दिया है। रेटिंग एजेंसी का कहना है कि पिछले तीन साल में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की औसत वास्तविक वृद्धि दर 8.1 फीसदी सालाना रही है और अब यह विकास दर अगले तीन साल में लगातार 7 फीसदी के करीब होगी। दुनिया के प्रसिद्ध इन्वेस्टमेंट बैंकर गोल्डमैन सैक्स ने अपनी नई रिपोर्ट में कैलेंडर वर्ष 2024 में भारत की विकास दर को बढ़ाकर 6.7 प्रतिशत कर दिया है। चालू वित्त वर्ष में विकास दर बढने संबंधी अन्य महत्वपूर्ण नई रिपोर्टों के तहत अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 6.8 प्रतिशत, एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने 7 प्रतिशत तथा विश्व बैंक ने 7.5 प्रतिशत विकास दर रहने के अनुमान व्यक्त किए हैं। देश और दुनिया के प्रमुख अर्थ विशेषज्ञों का मत है कि भारत की विकास दर आगामी दशक तक 6.5 से 7 प्रतिशत के स्तर पर दिखाई देगी। विभिन्न आर्थिक रिपोर्टों में इस बात को भी रेखांकित किया जा रहा है कि भारत में वर्ष 2023-24 में प्रत्यक्ष कर (डायरेक्ट टैक्स) संग्रह 17.7 फीसदी बढक़र 19.58 लाख करोड रुपए हो गया है। इसी तरह से 2023-24 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) उच्चतम स्तर पर रहा है। इसका आकार 20.18 लाख करोड़ रुपए रहा है, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 11.7 फीसदी अधिक है। कर संग्रह के ये चमकीले आंकड़े भारतीय अर्थव्यवस्था में तेज उछाल और व्यक्तियों तथा कॉरपोरेट सेक्टर की आमदनी में वृद्धि को दर्शाते हैं। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि जिस तरह से रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के द्वारा हाल ही में भारत सरकार के लिए अब तक के सबसे अधिक लाभांश की राशि सुनिश्चित की गई है, वहीं दूसरी ओर देश के शेयर बाजार ने पिछले 10 वर्षों में जो ऊंचाइयां प्राप्त की हैं, उससे दुनिया भर में भारत के नए तेज विकास की नई संभावनाएं आगे बढ़ी हैं। रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 में सरकार को 2.11 लाख करोड़ रुपए लाभांश देने की मंजूरी दी है। चालू वित्त वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट में सरकार ने रिजर्व बैंक और सरकारी बैंकों के लाभांश से 1.02 लाख करोड़ रुपए मिलने का अनुमान लगाया था। ऐसे में रिजर्व बैंक द्वारा दिया जाने वाला लाभांश बजट अनुमान की तुलना में 107 फीसदी ज्यादा है। यह एक तरह से सरकार के लिए मौजूदा वित्त वर्ष में 1.09 लाख करोड़ रुपए के अप्रत्याशित लाभ जैसा है। इतना ही नहीं, रिजर्व बैंक ने पहली बार आकस्मिक जोखिम बफ्र (सीआरबी) बढ़ाकर 6.5 फीसदी कर दिया गया है, जो पहले 6 फीसदी था। रिजर्व बैंक ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है, इसीलिए वित्त वर्ष 2023-24 के लिए आकस्मिक जोखिम बफ्र बढ़ाकर 6.5 फीसदी करने का निर्णय लिया गया है। उल्लेखनीय है कि रिजर्व बैंक के द्वारा सरकार को रिकॉर्ड लाभांश के दिए जाने के निर्णय और वैश्विक आर्थिक संगठनों व वैश्विक क्रेडिट एजेंसियों के द्वारा वर्ष 2024-25 में भारत की ऊंची विकास दर के अनुमानों के बाद भारतीय शेयर बाजार को लाभ मिला। यह उल्लेखनीय है कि शेयर बाजार और निवेशकों को उम्मीद थी कि 4 जून के लोकसभा चुनाव परिणामों से भाजपा और एनडीए को भारी बढ़त मिलेगी।

डा. अश्विनी महाजन

आत्मनिर्भर भारत नीति के तहत देश में विनिर्माण उत्पादन बढ़ाने के प्रयास भी फलीभूत हो रहे हैं, लेकिन इस दिशा में और अधिक प्रयासों की आवश्यकता होगी, ताकि भारत पूरी तरह से आत्मनिर्भर बन सके। देश में बढ़ती आबादी के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा करने होंगे। यह सही है, पारंपरिक रोजगार प्रभावित हो रहे हैं, लेकिन तकनीक के साथ तालमेल बने 2024 का आम चुनाव बेहद दिलचस्प रहा है। हालांकि भारतीय जनता पार्टी स्वयं की अपेक्षा से कम सीटें पाने में सफल रही, लेकिन एनडीए को सरकार बनाने का जनादेश जरूर मिला है। एक तरफनरेंद्र मोदी की अगुआई वाला एनडीए पिछले दस सालों के अपने काम और प्रदर्शन पर वोट मांग रहा था, वहीं दूसरी तरफ विपक्षी दलों का इंडी गठबंधन मोदी सरकार के दौरान महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दों को लेकर मतदाताओं के बीच जा रहा था। एक तरफनरेंद्र मोदी 'जीवन को आसान बनाने' की गारंटी और अपनी नीतियों के साथ लोगों तक पहुंच रहे थे, जिसमें गरीबों के लिए आवास, अगले 5 सालों तक गरीबों को मुफ्त राशन, गरीबों के साथ-साथ 70 साल से ज्यादा उम्र के लोगों के लिए आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत मुफ्त इलाज, किसान सम्मान निधि और दूसरी कल्याणकारी योजनाओं को जारी रखना शामिल था। लेकिन कांग्रेस जो कि इंडी गठबंधन की मुख्य पार्टी थी, वह पिछले चुनावों की तरह ही, हर गरीब परिवार को एक लाख रुपए की राशि, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी, जाति आधारित सर्वेक्षण करके धन का पुनर्वितरण (जनसंख्या के अनुसार) आदि की गारंटी के साथ चुनावी मैदान में थी। इंडी गठबंधन में शामिल अन्य क्षेत्रीय दल भी मुफ्त योजनाओं का लालच देकर जनता को लुभा रहे थे। लेकिन ऐसा लगता है कि मतदाताओं ने मुफ्त योजनाओं के लिए वोट नहीं दिया और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले एनडीए को जीत दिलाई। यह साबित करता है कि भारत की जनता ने नरेंद्र मोदी के दस साल के कार्यकाल के दौरान अपनाई गई नीतियों का समर्थन करके एनडीए को विजयी बनाया है, हालांकि उस भारी बहुमत के साथ नहीं, जिसका दावा सत्तारूढ़ गठबंधन कर रहा था, खासकर तीन बड़े राज्यों उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा में। हम देखते हैं कि नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में गरीबों के लिए बड़ी संख्या में कल्याणकारी योजनाएं शुरू की गईं, जिनके लाभार्थियों ने स्वाभाविक रूप से नरेंद्र मोदी का समर्थन किया है। लाभार्थियों की बात करें तो 4 करोड़ गरीब परिवारों के लिए पक्के मकानों का निर्माण नरेंद्र मोदी सरकार की एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। गौरतलब है कि जो गरीब परिवार पहले कच्चे या अर्ध-कच्चे मकानों में रहते थे, उनके लिए पिछले कुछ सालों में करीब 3 करोड़ ग्रामीण और एक करोड़ शहरी मकान बनाए गए। अगर पांच लोगों के परिवार को माना जाए तो करीब 20 करोड़ लोग इस योजना के लाभार्थी रहे हैं। समझा जा सकता है कि इस योजना ने उन गरीब परिवारों की कुशलता और जीवन स्तर में बड़ा बदलाव लाया है। स्वाभाविक रूप से एनडीए को इन लाभार्थियों का समर्थन मिला है। इसके साथ ही गरीबी के कारण एलपीजी कनेक्शन से वंचित 10 करोड़ महिलाओं को उज्ज्वला योजना के तहत न सिर्फ धुएं से मुक्ति मिली है, बल्कि उनके जीवन स्तर में भी बड़ा बदलाव आया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन लाभार्थियों ने भी नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले गठबंधन का समर्थन किया है। वैसे तो महिला स्वाभिमान के प्रतीक शौचालयों के निर्माण को सामाजिक क्रांति माना जा सकता है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इस योजना के कारण खुले में शौच से मुक्त हुई महिलाओं का समर्थन भी मौजूदा सरकार चला रही पार्टियों को मिला होगा। लगभग पूरे देश को नल से जल और शत-प्रतिशत बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराना किसी क्रांति से कम नहीं माना जा सकता। करीब 80 करोड़ आबादी को मुफ्त राशन और किसानों को 6 हजार रुपए प्रति वर्ष की राशि जारी रखने की गारंटी भी एक लोकप्रिय कदम माना जा रहा है। समझना होगा कि किसान सम्मान निधि को छोडक़र, जिसका असर करीब 75000 करोड़ रुपए प्रति वर्ष सरकारी खर्च पर पड़ता है, नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा चलाई जा रही कोई भी अन्य योजना नकद वितरण वाली नहीं थी। इससे पहले भी कांग्रेस ने किसानों के 70000 करोड़ रुपए के कर्ज माफ किए थे और 2024 में भी इसी तरह की घोषणा की गई थी। 2019 के चुनाव में कांग्रेस ने चुनाव जीतने के बाद हर गरीब परिवार को सालाना 72000 रुपए देने का वादा किया था और तब भी कांग्रेस को लोकसभा में सिर्फ52 सीटें ही मिलीं। यानी तब भी लोगों ने कांग्रेस की नकद वितरण योजना को नकार दिया था। इस बार कांग्रेस ने चुनाव के दौरान हर गरीब परिवार को सालाना एक लाख रुपए देने का वादा किया था और इसका खूब प्रचार भी किया था। हालांकि, कांग्रेस के इस वादे के क्रियान्वयन को लेकर लोगों में काफी संदेह था और कांग्रेस की सीटें 52 से बढक़र, सरकार में शामिल होने के लिए जादुई संख्या से काफी कम 100 से कुछ कम ही रहीं। एक तरफ जनता द्वारा नकद वितरण योजना को नकारना और दूसरी तरफमोदी सरकार द्वारा चलाई जा रही सामाजिक कल्याण योजनाओं पर दिखाया जा रहा भरोसा, देश के मतदाताओं और लोकतंत्र की परिपक्वता को दर्शाता है। देश ने 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लिया है। यह सच है कि पिछले 10 सालों में भारत की जीडीपी 2 ट्रिलियन डॉलर से बढक़र लगभग 4 ट्रिलियन डॉलर हो गई है। और देश दुनिया की 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से आगे बढक़र 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है, लेकिन यह भी सच है कि हमारे देश में अमीर और गरीब के बीच असमानता अभी भी बनी हुई है। हालांकि, अत्यधिक गरीबी में काफी कमी आई है, लेकिन मोदी सरकार के पहले नौ वर्षों में 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने के बावजूद बहुआयामी गरीबी से पीड़ित लोगों की संख्या वर्ष 2023 तक 12 करोड़ बनी हुई थी। यह सही है कि राजकोषीय सूझबूझ के कारण सरकार का पूंजी निवेश बढ़ रहा है, देश में बड़ी मात्रा में बुनियादी ढांचे का निर्माण हो रहा है, जिससे देश में लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने और आम लोगों के जीवन को आसान बनाने में सफलता मिल रही है। दूसरी ओर, तकनीक का उपयोग करके ऑनलाइन लेन-देन दुनिया में कहीं और की तुलना में भारत में कहीं अधिक हो रहा है, सरकार अधिक से अधिक पेटेंट देने में भी सफल रही है, और अंतत: वर्ष 2014 में केवल 4227 पेटेंट की तुलना में वर्ष 2024 में 1.03 लाख पेटेंट दिए गए, जो देश में नवाचार में विकास को दर्शाता है। हालांकि, उत्पादों के निर्माण में हमारी निर्भरता अभी भी विदेशों पर बनी हुई है। आत्मनिर्भर भारत नीति के तहत देश में विनिर्माण उत्पादन बढ़ाने के प्रयास भी फलीभूत हो रहे हैं।

चिंतनीय:धार्मिक आयोजनों में बढ़ता बोतल बंद पानी का चलन पानी छानकर पीने की हमारी आदर्श परंपरा पर कुठाराघात.....

-डॉ. सुनील जैन संचय

रात्रि भोजन त्याग, प्रतिदिन देवदर्शन और पानी छानकर पीना ये जैनी के चिह्न माने गए हैं। इस लेख में हम पानी छानकर पीने की अपनी आदर्श कुलाचार

परंपरा के बारे में चर्चा करने जा रहे हैं।बुंदेलखंड में एक पुरानी कहावत है- गड़ई- डोर -छन्ना ,कनक कलेऊ भन्ना ये जैनी के चिन्हा यानि हमारी पहचान छने पानी का उपयोग करने वालों में जगजाहिर थी।

हम अहिंसा धर्म को मानने वाले हैं। जैन धर्म के अनुसार पानी छानने की जो भावना है वह जीव-दया की भावना है। जैन धर्म के अनुसार जल में त्रस जीव भी होते हैं। विज्ञान के अनुसार एक बूंद पानी में 36450 जीव होते हैं, त्रस जीवों की संख्या तो बहुत ज्यादा है। हमें पानी तो पीना ही है, पानी के बिना रहना सम्भव नहीं है। तो एक व्यवस्था बताई गयी कि जीवदया का पालन करने की भावना से आप जल के स्त्रोत से जल को निकालो। उसे गाढ़े छन्ने से छानो और बड़े इत्मिनान के साथ आप पानी की जीवाणी करो यानि वो पानी के छन्ने को छने पानी से धोकर वापस जलाशय में ले जाओ और उसे उड़ेल दो और इसके पीछे की जो भावना है वह है ङ्क जीव दया का अनुपालन! इस दृष्टि से सच्चे अर्थों में पानी छानने का लाभ उनको मिलता है जो कुँआ, नदी या ऐसे जलाशयों से जल लाते हैं, जहाँ ध्यानपूर्वक जीवाणी पहुँचाई जा सके। जीवाणी को बुंदेलखंड में बिलछानी भी कहते हैं।

छने जल की मर्यादा एक मुहूर्त अर्थात् 48 मिनट है। इसके बाद उसमें पुन: त्रस जीवों की उत्पत्ति होने लगती है। अत: पुन: छानना चाहिए। छने जल को लौंग, सौंफ आदि से प्रासुक किया जाता है तो उसकी मर्यादा छ: घंटे हो जाती है, किन्तु छ: घंटे के बाद वह अमर्यादित हो जाता है। अर्थात् उसमें त्रस जीवों की उत्पत्ति प्रारम्भ हो जाती है। उबले (क्वथद्वद्यद्गस्र) जल की मर्यादा 24 घंटे होती है। पानी छानने की विधि का पालन करना पाइप लाइन , ट्यूब वेल, हेंडपम्प के साथ सम्भव नहीं है इसीलिए बिलछानी के नियम का कठोरता से पालन करने वाले जैन साधु और व्रती कूप के जल का ही उपयोग करते हैं।

आज डॉक्टर स्वास्थ्य की दृष्टि से छने पानी के पीने के लिए जोर देते हैं, जबकि जैनदर्शन स्वास्थ्य के साथ जीवदया का भी पालन करने का निर्देश करता है। कहा भी गया है कि पानी पिओ छानकर, गुरु मानो जानकर।

पीने छानकर पीने की आदर्श परंपरा आज हमारी जैन समाज से विलुप्त सी होती जा रही है, जलगालन विधि के बारे में तो आज की ज्यादातर आधुनिक पीढ़ी को पता ही नहीं है। अब तो नलों में लगी थैली को छने पानी की मान्यता सी मिल गयी प्रतीत होती है और वह भी अनेक दिनों तक एक नल में लगी रहती है। सबसे बड़ी विडंबना तो यह है कि आज ज्यादातर हमारे धार्मिक आयोजनों में भी बिना छने पानी का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है और यह सब उस आयोजन में सान्निध्य प्रदान कर रहे संतों और विद्वानों को भी पता होता है। निश्चित रूप से यह बहुत ही चिंतनीय है।

आज धार्मिक आयोजनों में बोतल बंद पानी का प्रचलन खूब हो गया है, यहां तक देखा गया है कि एक तरफछना पानी रखा हो दूसरी तरफबोतल बंद/आरओ का पानी तो लोग बोतल बंद /आरओ का पानी पीना शान समझते हैं? ऐसे लगता है जैन समाज ने बोतल बंद पानी को शुद्ध मान लिया हो! बहुत से पंचकल्याणक, गजरथ, विधानों आदि में भी इनके पात्र यह पानी खूब धड़ल्ले से पीते हैं? इस प्रवृत्ति से पानी छानकर पीने की हमारी कुलाचार परम्परा पर आघात पहुँच रहा है। मैंने स्वयं देखा इधर गजरथ की फेरी चल रही है और उधर उस फेरी में चल रहे महोत्सव के पात्र एवं अन्य लोगों को आयोजन समिति द्वारा बोतल बंद पानी की बोतलें पीने के लिए बांटी जा रहीं हैं, फेरी में चलते हुए ही खूब धड़ल्ले से बोतल बंद पानी पिया जा रहा है सब देख ही नहीं बल्कि बोतल बंद पानी पाने के लिए होड़ भी लगी है, सबकी नजर में है पर बोल कोई नहीं रहा है। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। धार्मिक आयोजनों की सभा, सेमिनार, रैली, जुलूस शोभायात्रा आदि में बोतल बंद पानी का चलन आम हो चुका है। आपने भी ऐसे धार्मिक आयोजन देखे होंगे जिसमें नगर में शोभायात्रा निकलने पर बोतल बंद पानी की खाली बोतलें शहर में इधर-उधर पड़ी आपकी शोभायात्रा, जुलूस की निशानी बता रहे होंगे। जैन समाज की विभिन्न धार्मिक बैठकों में भी अब बोतल बंद पानी/आरओ का पानी का प्रयोग फैशन सा बन गया प्रतीत होता है। धार्मिक आयोजन में जो भोजन होता है उसमें भी इसी पानी के प्रयोग का प्रचलन बढ़ रहा है। बड़े -बड़े धार्मिक महोत्सवों में तो अब यह बोतल बंद पानी सस्ते दामों में भी बांटकर पुण्यार्जन किया जाने लगा है। पानी छानकर पीने व जलगालन विधि में आई इस विकृति पर हमें गंभीरता पूर्वक चिंतन करना होगा। कम से कम धार्मिक आयोजनों में तो अनछने जल का प्रयोग बंद होना चाहिए। इसके लिए हमारे आराध्य सभी पूज्य मुनिराजों, माता जी, विद्वानों को अवश्य ध्यान देना होगा अन्यथा आने वाली पीढ़ी तो इससे अनजान ही हो जाएगी।

आचार्यश्री विद्याभूषण सन्मतिसागर अवार्ड समारोह 23 जून को दिल्ली में, राज्यसभा सांसद नवीन जैन एवं पवन जैन होगें मुख्य अतिथि

दिल्ली (विश्व परिवार)। आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मति सागर अवार्ड समारोह 23 जून को दिल्ली में आयोजित होने जा रहा है।

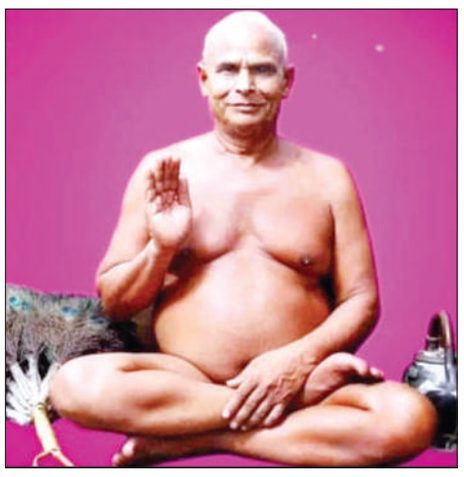

स्यादवाद इम्पैक्स प्रा. लि. दिल्ली के डायरेक्टर एवम सन्मति फाउंडेशन के संस्थापक महेंद्र जैन मधुवन दिल्ली द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिगंबर जैसवाल जैन उपरोचियां समाज के प्रतिभावान एवम होनहार बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु सन्मति फाउंडेशन का‚ ह्वत्रष्ठ ह्रस्र श्वङ्गष्टश्वस्रश्वहृष्टश्व कार्यक्रम रविवार 23 जून को आर्चिड ग्रैंड कड़कड़डूमा मेट्रो स्टेशन दिल्ली में समारोह पूर्वक आयोजित होने जा रहा है।

उक्त आयोजन में अखिल भारतवर्षीय जैसवाल जैन उपरोचियां समाज के कक्षा 10 एवम कक्षा 12 के टॉपर 3 - 3 छात्र -छात्राओं को आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मति सागर अवार्ड से सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष आयोजित अवार्ड समारोह में 6 टॉपर बच्चों को नगद धनराशि के साथ साथ प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह आदि प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। इसके साथ ही दिल्ली एनसीआर के कुछ बच्चों को भी उत्कृष्टता के आधार पर अवार्ड प्रदान किए जायेगें।

सन्मति फाउंडेसन के अध्यक्ष अनिलकुमार जैन एवम महामंत्री नबीनकुमार जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर अवार्ड समारोह में संरक्षक ट्रस्टी महेंद्र जैन मधुवन एवम अशोक कुमार जैन वर्धमान जनरेटर दिल्ली को विशेष बहुमान दिया जाएगा। समारोह के मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद माननीय नवीन जैन (पीएनसी) आगरा एवम श्री पवन जैन पीएस होटल शिवपुरी होगें। छात्र छात्राओं को अवार्ड की राशि राजेंद्र कुमार जैन नोएडा एवम अनिलकुमार जैन नोएडा द्वारा प्रदान की जाएगी।

समारोह में दीप प्रज्वलन इंजीनियर भूपेंद्र जैन ग्रीनपार्क, अजीत जैन सफदरजंग, सीए विमल जैन मयूर विहार, सुनील जैन मोना जनरेटर, जिनेंद्र प्रभु के चित्र का अनावरण अजय जैन साउथ एक्सटेंशन, सुदीप जैन गुरुग्राम, सुरेश जैन साउथ एक्सटेंशन, आचार्य श्री के चित्र का अनावरण सुरेश जैन द्वारिका, राजीव जैन जनकपुरी, दिवस जैन अलंकार प्रकाशन, मनोज जैन करोलबाग, जिनवाणी स्थापना मुन्नी जैन मधुवन, शशी कमलेश जैन नायक गुरुग्राम, जहान्वी जैन खेलगांव करेंगी।

समारोह में मंच संचालन की जिम्मेदारी श्रीमती नीरू जैन गणेशनगर को दी गई है। समारोह के मध्य संस्था के परम संरक्षक सीए अजय जैन कोटा अपने सुमधुर गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध करेंगे।

रविवार 23 जून को प्रात: 09:30 बजे सन्मति फाउंडेशन की आम बैठक होगी। मंगलगान, चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के पश्चात 10.30 बजे प्रतिभाओं को अवार्ड वितरित किए जायेगें। कार्यक्रम पश्चात सभी के वात्सल्य भोज की व्यवस्था की गई है। **-मनोज जैन नायक**

ज्ञान व संस्कार ही श्रेष्ठ भविष्य के आधार : आचार्य श्री अरुण सागर जी

जेस, वीएमएसएस, सखी फरीदाबाद ने प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया

फरीदाबाद (विश्व परिवार)। सेक्टर 88 स्थित आराध्य धाम जिन मंदिर में जैन इंजिनयर्स सोसाइटी, वर्धमान महावीर सेवा सोसाइटी, संस्था सखी व आराध्य धाम परिवार द्वारा इंटरमीडिएट व हाई स्कूल परीक्षा में 85-90 प्रतिशत अंक लाने वाले होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित कर उनके श्रेष्ठ, सफल भविष्य हेतु प्रेरक सन्देश आचार्य अरुण सागर महाराज द्वारा प्रदान किये गये। उन्होंने अपने उदबोधन में कहा कि पढ़लिख कर धनार्जन के साथ साथ आप सभी श्रेष्ठ संस्कार सीखें व अपने कार्यों से समाज के वंचित वर्ग को सहयोग दें. सेवा, अनुराग व सहयोग के भाव विकसित करें।

सी. बी. एस. ई. व अन्य बोर्ड के परीक्षा परिणाम आने पर सफल बच्चों के परिवार व स्वजनों के मन में हर्ष था. इन बच्चों को श्रेष्ठ मंच से सम्मनित करने के लिए जैन इंजिनयर्स सोसाइटी, वर्धमान महावीर सेवा सोसाइटी, संस्था सखी के इंजिनियर अरुण कुमार जैन, डॉ सुभाष जैन, श्री सुरेंद्र जैन व श्री धीरज जैन ने पहलकर, आराध्य धाम प्रणेता आचार्य अरुण सागर महाराज जी के सानिध्य में एक प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया।

इस कार्यक्रम में 30 से अधिक बच्चों को सम्मनित किया गया जिन्होंने 10 वीं की परीक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक व 12वीं की बोर्ड परीक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये. इनमें 96 प्रतिशत अंक पाने वाली स्वर्णना जैन व अविशी जैन, 95 प्रतिशत अंक पाने वाली श्रेया जैन आदि 18 बच्चे 12 वीं कक्षा में सफलता पाने वाले थे व 10 वीं की परीक्षा में अनय जैन (98.6 प्रतिशत)काश्वी जैन, वंश जैन, निर्जरा जैन, गरिमा जैन (97 प्रतिशत), तमन्ना जैन, अरहम जैन (96.6 प्रतिशत)आदि 32बच्चों ने सम्मान प्राप्त किया।

जैस व वर्धमान महावीर सेवा सोसाइटी के संरक्षक डॉ. सुभाष जैन ने सभी बच्चों को प्रेरक उपहार दिए, आचार्य श्री जी ने सभी को प्रमाण पत्र दे आशीर्वाद प्रदान किये. इंजिनियर डी. के. जैन ने अपनी टीम के साथ बच्चों को तिलक लगाया व श्री मनोज जैन, धीरज जैन, सुरेंद्र जैन, इंजिनियर अभिनव जैन ने अंग वस्त्र प्रदान किये. संस्था सखी की श्रीमती रेखा जैन ने सभी के प्रेरणा स्रोत व भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी.कार्यक्रम का संचालक इंजिनियर अरुण जैन अध्यक्ष जेस ने किया। सम्मान के समय बच्चों के साथ उनके माता, पिता, दादा, दादी भी उपस्थित रहे, जिसमे कार्यक्रम और अधिक ऊर्जावान रहा. कार्यक्रम में नगर की विशिष्ट बिभूतियाँ थीं जिनमें डॉ, इंजिनियर, सी. ए., उद्योगपति, समाज सेवी व सेवाभावी नागरिक थे।

कार्यक्रम में सम्मनित होकर बच्चे व उनके माता, पिता उत्साहित थे.कार्यक्रम के पश्चात सहभोज की सुन्दर व्यवस्था की गयी।

कार्यक्रम को सफल बनाने में इंजिनियर वी आर जैन, इंजिनियर डी के जैन, इंजिनियर इतिका जैन, श्रीमती नंदा जैन, इंजिनियर अम्बर जैन, इंजिनियर मनोज जैन, इंजिनियर एस. के. जैन का समर्पित सहयोग रहा।

आरोग्य, बुद्धि, विनय, शास्त्रानुराग से किया गया स्वाध्याय का उद्यम पुण्यशाली फल होता है स्वाध्याय तप : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

बांसवाड़ा (विश्व परिवार)। पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी संघ सहित खांदू कालोनी में विराजित हैं आज की धर्म सभा में आचार्य श्री ने धर्म देशना में बताया कि स्वाध्याय क्यों करना चाहिए, स्वाध्याय की क्या परिभाषा है, स्वाध्याय के क्या-क्या गुण है, स्वाध्याय कैसे करना चाहिए, स्वाध्याय के लिए कैसा वातावरण होना चाहिए, कौन सा स्थान उपयुक्त है, हमारा जन्म क्यों हुआ जीवन का वास्तविक लक्ष्य क्या है आदि अनेक विषयों पर विस्तृत विवेचना आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने खांदू कॉलोनी बांसवाड़ा की धर्म सभा में प्रकट की ।आचार्य श्री ने बताया कि स्व का अध्ययन, आत्मा का अध्ययन ही स्वाध्याय है ।जिस प्रकार कोई भी कार्य आप अंतरंग और बहिरंग कर्म से करते हैं वैसे ही स्वाध्याय भी अंतरंग और बहिरंग तप कर्म से किया जाता है। स्वाध्याय करने के लिए आरोग्य, बुद्धि, विनय, उद्यम, शास्त्र अनुराग होना जरूरी है यदि आप स्वस्थ हैं निरोगी है तो आपका स्वाध्याय में चित मन लगेगा विषयों की आकांक्षा कषाय नहीं होना चाहिए तभी आप स्वाध्याय से, उपदेश से आत्मा का स्वरूप समझ सकते हैं। रोगी व्यक्ति का मन विचलित होता है, स्वाध्याय तप है इसके लिए तैयारी करना होती है हमारी बुद्धि अन्य लौकिक कार्यों में तेजी से चलती है किंतु स्वाध्याय में बुद्धि नहीं लगती हैं, कहते हैं हमारा मन नहीं लगता ।आचार्य श्री ने भिंडर के प्रसिद्ध विद्वान जवाहरलाल जी शास्त्री का उदाहरण दिया कि उन्होंने षटखंडागम, महाबंध समयसार आदि अनेक बड़े-बड़े ग्रंथ उनको कंठस्थ है ।यह सब बुद्धि के क्षयोपशम स्वाध्याय करने से आपको प्राप्त होता है। ब्रह्मचारी गज्जू भैय्या एवम समाज सेठ अमृतलाल अनुसार आचार्य श्री वर्धमानसागर जी ने बताया कि भगवान ने उपदेश में साततत्व बताएं हैं बुद्धि का सही उपयोग से शास्त्र और उपदेश समझ में आता है। स्वाध्याय विनयपूर्वक करना चाहिए खड़े-खड़े स्वाध्याय नहीं होता है, बैठकर आसन की स्थिरता से शास्त्र को अपने से ऊपर रखकर विनय पूर्वक स्वाध्याय करना चाहिए ।शास्त्र अनुराग को स्पष्ट करते हुए बताया कि आपको शास्त्र के प्रति अनुराग होना चाहिए जिस शास्त्र का स्वाध्याय अपने प्रारंभ किया है वह ग्रंथ पूर्ण होने तक दूसरे ग्रंथ का स्वाध्याय नहीं करना चाहिए तभी आप उसे ग्रंथ को भली-भांति समझ सकेंगे। आचार्य श्री ने बताया कि स्वाध्याय आचार्य साधु संग या विद्वान के सानिध्य में करना चाहिए क्योंकि स्वाध्याय से विशुद्धता प्राप्त होती है स्वाध्याय के लिए जिनालय मंदिर ज्यादा उपयुक्त है क्योंकि स्वाध्याय के लिए मन की स्थिरता शांत वातावरण से मिलती है वहां निराकूलता होती है निवास पर शोरगुल से आकुलता और मन विचलित होता हैं ।स्वाध्याय से संसार विषय भोग के प्रति वैराग्य का निमित्त बनता है स्वाध्याय में महापुरुषों का जीवन चरित्र पढ़ने को मिलता है अनेक कथानक है कि साधु के दर्शन साधु के उपदेश से अनेक भव्य प्राणियों को वैराग्य हो गया। राजेश पंचोलिया एवं समाज प्रतिनिधि अक्षय डांगरा अनुसार आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने बताया कि शरीर के प्रति आपको मैत्री भाव रखना चाहिए क्योंकि आपका शरीर धार्मिक कार्य करने में आपका सहयोगी है इसलिए शरीर से शत्रुता नहीं मित्रता होना चाहिए। मन की निग्रह एकाग्रता से स्वाध्याय होता है मन को स्थिर रखने के लिए नियंत्रण होना चाहिए तभी कार्य की सिद्ध होगी। इंद्रीय विषय के भोग दुख देते हैं आचार्य श्री ने बताया कि इस स्पर्शन इंद्रिय सुख आप इतने भोगी हो चुके हैं कि धर्म सभा मंदिर में भी पंखे लगा रखे हैं। पंखे की हवा आपको हवा कर देगी ।पंखों के उपयोग में भी विवेक होना चाहिए भगवान की भक्ति, पूजन दर्शन अभिषेक आप 1 घंटे के लिए करते हैं तो बगैर पंखे के रहने का प्रयास करें। इंद्रिय विषयों पर चार प्रकार की संज्ञा जीवन को अस्थिर करती है ।आपकी अनेक शंकाओं, जिज्ञासा का समाधान स्वाध्याय से मिलता है आप आचार्य साधु परमेष्ठी विद्वानों से भी अपनी जिज्ञासा का समाधान कर सकते हैं।

ओछी सोच व्यक्ति को ओछा बनाती है : मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज

विदिशा (विश्व परिवार)। चिलम को कलश का आकार देते देखकर कुम्हारिन ने पूछा कि मिट्टी का आकार क्यूं बदला? कुम्हार ने कहा कि बस यूं ही मेरा विचार बदल गया, तो मिट्टी ने तपाक से कहा कि तुम्हारा विचार क्या बदला मेरा तो संसार ही बदल गया। उपरोक्त उद्‌गार प्रमाणिक संत मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज ने भोपाल आगमन पर आयोजित धर्मसभा में जुमेराती चौक पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अच्छी सोच व्यक्ति को अच्छा और ओछी सोच व्यक्ति को ओछा बनाती है। हम किसी व्यक्ति की पहचान उसकी बाहर की आकृति से नहीं कर सकते, उसकी पहचान जब भी होगी उसके भीतर की प्रकृति से होगी, मुनि श्री ने हंसी में कहा कि यदि कोई आपको चार बातें सुनाऐ तो आपको बुरा लगता है, लेकिन मेरी चार बातें सुनने के लिये आप लोग गाजे बाजे के साथ यंहा लेकर आये हो ?दुनिया में ऐसे लोग बहूत है जिनकी बातें लोग सुनना ही नहीं चाहते, बो भी ऐसी बातें सुनें और सुनायें कि लोग निहाल हो जाऐ! उन्होंने सोच पर चार बातें सुनाते हुये कहा कि सही सोचें सुंदर सोचें सही देखें सुंदर देखें सही बोलें सुंदर बोलें सही करें सुंदर करें यदि यह चार सूत्र हमारे जीवन में आ जाऐं तो जीवन धन्य हो जाऐ मुनि श्री ने कहा कि संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो सोच से समृद्ध है मनुष्य चाहे तो अपनी सोच को राबण की सोच बनाकर अपने जीवन को तबाह कर सकता है, और मनुष्य चाहे तो अपनी सोच को राम की सोच बनाकर एक आदर्श प्रस्तुत कर सकता है, उन्होंने कहा कि हमारे विचारों में ही राम है, और हमारे बिचारों में ही राबण। विचारों में यदि धर्म बोलेगा तो समझाना आपके हृदय में राम है, और यदि तुम्हारे जीवन में अधर्म बोल रहा है तो यह मानकर चलना कि नाम भले ही राम का है, लेकिन भीतर राबण का राज्य चल रहा है, हमारी चित्तवृत्ति से ही हमारा जीवन संचालित होता है उन्होंने कहा कि हालांकि हर व्यक्ती अपनी सोच को सुंदर और सही मानता है और उस सोच को सही साबित करने की कोशिश भी करता है। मुनि श्री ने चार प्रकार की भौतिक, व्यवसाइक, व्यव्हारिक, आध्यात्मिक सोच को बताते हुये कहा कि जिन लोगों की भौतिक सोच होती है ऐसे लोग मौज मजा और मस्ति में अपना पूरा जीवन बिता देते है उनके जीवन का एक ही लक्ष्य रहता है जब तक जिओ सुख से जिओ कर्जा लो और घी पिओ व्यवसाइक सोच बाले लोग अपने लाभ की सोच बाले होते है ऐसे लोग अंदर जल्दी और ज्यादा लाभ उठाने के लिये अपने जीवन को ही ब्यापार बना देते है। उन्होंने व्यापार और व्यवहार में अंतर बताते हुये कहा कि जो कार्य लाभ हांनी को देखकर किया जाऐ वह व्यापार तथा जो अच्छे और बुरे ख्याल से किया जाऐ वह व्यवहारिक सोच कहलाती है। उन्होंने कहा कि व्यापार करो तो व्यापार की नीती से करो कभी ओव्हर स्टीमेट मत करो, गुरुदेव हमेशा कहते थे कि जितनी चादर हो उतना ही पैर फैलाओ जो लोग ओव्हर स्टीमेट एवं त्वरित लाभ की सोचते है ऐसे लोग लगातार नुकसान पर नुकसान सहन करना पड़ता है, ऐसे लोग अपनी पूंजी को भी डुवो देते है। अपना व्यवहार ऐसा बनाओ जिससे किसी का दिल न दुखे जैसे व्यापार में लोगों की बात को सुनते हो उसे नाराज नहीं करते उसी प्रकार से अपने व्यवहार को शालीन और निर्मल बनाओ, अपनी सोच को ऐसी बनाओ कि आपका नौकर भी आपकी प्रशंसा करे विना न रह सके। स्वार्थ और संकीर्णता की दशा में मनुष्य अपना जीवन आगे नहीं बड़ा सकता वही व्यक्ति अपने जीवन को ऊंचा उठा सकता है जिसका चित्त उदार हो, चिंतन विशाल हो हृदय व्यापक हो, ऐसा व्यक्ति खुद ऊंचा उठ सकता है तथा औरो को ऊंचा उठा सकता है। **-अविनाश जैन**

श्रुत पंचमी पर आर्यनंदी कालोनी जैन मंदिर में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न

छत्रपति संभाजीनगर (विश्व परिवार)। श्री 1008 चंद्रप्रभु खंडेलवाल दिगंबर जैन मंदिर आर्यनंदी कालोनी, वेदांत नगर में श्रुत पंचमी पर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। आरंभ में सुबह 7 बजे ग्रंथों को सजाकर भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जो वेदांत नगर, राष्ट्रसंत आचार्य पुलकसागर महाराज चौक से गुजरते हुए आर्यनंदी कालोनी जैन मंदिर में संपन्न हुई।

बाद में मंदिर में भगवान चंद्रप्रभु व षटखंडागम ग्रंथ के सामने आयना रखकर प्रतिकृति का भव्य पंचामृत अभिषेक किया गया। शांतिमंत्र का पाठ किया गया। शोभायात्रा व सभी कार्यक्रमों में समाज के महिला व पुरुष बड़ी संख्या में उपस्थित थे। शोभायात्रा मे महिलां पुरुषांने षटखंडागम, महापुराण, पदमपुराण, जैन सिध्दांत कोष, भगवान महावीर पुराण, 24 तिर्थंकर पुराण धार्मिक ग्रंथ सिर पर रखकर चल रही थी ईस अवसर पर विजयकुमार अजमेरा लता अजमेरा ईनकी शादी की सालगिरापर मंदिरा कमीटी ओरसे सन्मान कीया गया ईसअवसर पर दिनेश सेठी, विजयकुमार अजमेरा, संदिप ठोले, आनंद सेठी, हुकुमचंद चांदीवाल, विजय पापडीवाल, अरुण पाटणी, ज्योती चांदीवाल, सुचिता सेठी, निर्मला जालनापुरकर, पियुष पापडीवाल, अंजली पापडीवाल, निता सेठी, श्रीपाल पाटणी, अजयकुमार पाटणी, पारस पांडे श्रेनीक कासलीवाल, शिरीष पाटणी, निवेदिता सेठी, सुनिता कासलीवाल, कुंकुमबाई पापडीवाल, निकीता पापडीवाल, माधुरी पापडीवाल, शोभाबाई पांडे, निलम पाटणी, सोनल कासलीवाल, अंजली पापडीवाल, नमन सेठी, किर्ती अजमेरा, संगीता सेठी, उषा कासलीवाल, कंचनबाई ठोले, शरद जालनापुरकर, पियुष कासलीवाल, दिनेश जैन उपस्थित थे।

हृदय में गुरु विराजमान हैं तो आप पाप नहीं कर सकते : मुनिश्री वीरसागर जी महाराज

सागर (विश्व परिवार)। ऑक्सीजन के बिना कोई जीवित नहीं रह सकता है हृदय एक मिनट को बंद हो जाए तो शरीर नीचे रहता है और आत्मा ऊपर चली जाती है। सांसें गर्भ में आए शिशु से लेकर व्यक्ति के अंतिम समय तक सिर्फ हृदय चलता है गुरु का नाम व्यक्ति अपने हृदय में लेकर के चिंतित रहता है। जिसके हृदय में गुरु विराजमान होते हैं वह कभी पाप नहीं कर सकता है यह बात निर्यापक मुनि श्री वीर सागर महाराज ने पारस नाथ जैन मंदिर कटरा के फर्श पर कही। उन्होंने कहा कि आप अन्य कितने समय खाते पीते हैं? पानी से जीवन चलता है जब पेट भर जाता है आप उससे ज्यादा खा पी नहीं सकते हैं और यदि खाना पीना जारी रखा तो उल्टी हो जाती है क्योंकि भोजन पानी करने की एक अपनी सीमा है और उसके बाद विरक्ति हो जाती है। मुनिश्री ने कहा आती जाति सांसों में गुरु का नाम व्यक्ति के हृदय में बना रहता है। गुरुदेव ने बुंदेलखंड वालों को क्या नहीं दिया 40-45 साल पहले जैनों की स्थिति क्या थी लेकिन गुरुदेव के बुंदेलखंड में आने के बाद जैन करोड़पति और अरबपति हो गए और दानवीर भी बन गए। गुरुदेव ने लाखों करोड़ों लोगों को बांटा ही बांटा है उजाड़ा किसी को नहीं है बुंदेलखंड से चेतन (मुनि) और अचेतन दिए हैं गुरुजी का अधूरा सपना भाग्योदय में बन रहा सर्वतोभद्र जिनालय है यदि कोई सपना आपको पूरा करना है तो आपकी नींद उड़ जाना चाहिए जब चिंता होती है तो नींद भी उड़ जाती है इसी प्रकार मंदिर निर्माण जल्दी हो। इसके लिए भी आप सभी की नींद उड़ जाना चाहिए। गुरुदेव ने जो आप सागर वालों को दिया है वो किसी अन्य जगह को नहीं। कार्यक्रम का संचालन मुकेश जैन ढाना और सपन जैन ने किया पारसनाथ मंदिर कमेटी इन्द्रकुमार नायक देवेन्द्र जैना, प्रकाश जैन ने मुनिश्री को श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद लिया। पाद प्रच्छालन महेश बिलहरा संतोष बिलहरा परिवार ने किया। शास्त्र भेंट करने का अवसर मनोज जैन आरंभ, सुनील जैन बरौदा, संतोष जैन बिलहरा, साधिका अनीता दीदी, सीए आशिका समैया, विशाल जैन पथरिया, पारस प्रगति महिला मंडल नमक मंडी को मिला।

भोपाल रेल मंडल के मालखेड़ी-महादेवखेड़ी रेलवे स्टेशनों को दूसरी रेललाइन से जोड़ने का कार्य, फलस्वरुप कुछ यात्री गाड़ियों का परिचालन रहेगा प्रभावित

रायपुर (विश्व परिवार)। अधोसंरचना विकास हेतु पश्चिम मध्य रेलवे भोपाल रेल मंडल के मालखेड़ी-महादेवखेड़ी रेलवे स्टेशनों के बीच दोहरीकरण रेललाइन का कार्य किया जा रहा है। इस दूसरी रेललाइन को मालखेड़ी-महादेवखेड़ी रेलवे स्टेशनों से जोड़ने का कार्य किया जाएगा। इस कार्य के लिए नॉन इंटरलोकिंग कार्य किया जाएगा। यहा कार्य दिनांक 16 जून से 10 जुलाई, 2024 तक (विभिन्न तिथियो में) किया जायेगा। इस कार्य के पूर्ण होते ही गाडियों की समयबद्धता एवं गति में तेजी आयेगी। इस कार्य के फलस्वरूप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की कुछ यात्री गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा। जिसका विवरण इस प्रकार है-

रद्द होने वाली गाडियां- दिनांक 29 जून एवं 06 जुलाई, 2024 को उदयपुर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20971 उयदपुर-शालीमार एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 30 जून एवं 07 जुलाई, 2024 को शालीमार से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20972 शालीमार-उयदपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 16, 23, 30 जून एवं 07 जुलाई, 2024 को बीकानेर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20471 बीकानेर-पूरी एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 19, 26 जून एवं 03, 10 जुलाई, 2024 को पूरी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20472 पूरी-बीकानेर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 29 जून एवं 06 जुलाई, 2024 को शालीमार से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22830 शालीमार-भुज एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 02 एवं 09 जुलाई, 2024 को भुज से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22829 भुज-शालीमार एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 27 जून एवं 04 जुलाई, 2024 को विशाखापटनम से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18573 विशाखापटनम-भगत की कोठी एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 29 जून एवं 06 जुलाई, 2024 को भगत की कोठी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18574 भगत की कोठी-विशाखापटनम एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 05, 06 एवं 09 जुलाई, 2024 को विशाखापटनम से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20807 विशाखापटनम-अमृतसर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 06, 07 एवं 10 जुलाई, 2024 को अमृतसर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20808 अमृतसर-भगत की कोठी एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 14, 21 एवं 28 जून, 2024 को पूरी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 08475 पूरी-निज़ामुद्दीन स्पेशल ट्रेन रद्द रहेगी। 15, 22 एवं 29 जून, 2024 को निज़ामुद्दीन से रवाना होने वाली गाडी संख्या 08476 निज़ामुद्दीन-पूरी स्पेशल ट्रेन रद्द रहेगी। 14 जून से 09 जुलाई, 2024 तक बिलासपुर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18236 बिलासपुर -भोपाल एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 16 जून से 11 जुलाई, 2024 तक भोपाल से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18235 भोपाल- बिलासपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 01 एवं 08 जुलाई, 2024 को दुर्ग से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18207 दुर्ग-अजमेर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 02 एवं 09 जुलाई, 2024 को अजमेर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18208 अजमेर-दुर्ग एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 30 जून एवं 07 जुलाई, 2024 को दुर्ग से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18213 दुर्ग-अजमेर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 01 एवं 08 जुलाई, 2024 को अजमेर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18214 अजमेर-दुर्ग एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 09 जुलाई, 2024 को दुर्ग से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12549 दुर्ग-शहीद कैप्टन तुषार महाजन (ऊधमपुर) एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 11 जुलाई, 2024 को शहीद कैप्टन तुषार महाजन (ऊधमपुर) से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12450 शहीद कैप्टन तुषार महाजन (ऊधमपुर)-दुर्ग एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 03 जुलाई, 2024 को दुर्ग से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20847 दुर्ग-शहीद कैप्टन तुषार महाजन (ऊधमपुर) एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 05 जुलाई, 2024 को शहीद कैप्टन तुषार महाजन (ऊधमपुर) से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20848 शहीद कैप्टन तुषार महाजन (ऊधमपुर)-दुर्ग एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 05 एवं 09 जुलाई, 2024 को दुर्ग से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22867 दुर्ग-निज़ामुद्दीन एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 06 एवं 10 जुलाई, 2024 को निज़ामुद्दीन से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22868 निज़ामुद्दीन-दुर्ग एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 09 जुलाई, 2024 को निज़ामुद्दीन से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22408 निज़ामुद्दीन-अम्बिकापुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 11 जुलाई, 2024 को अम्बिकापुर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22407 अम्बिकापुर-निज़ामुद्दीन एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 03 एवं 10 जुलाई, 2024 को रानी कमलापति से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22169 रानी कमलापति-सांतरागाछी एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 04 एवं 11 जुलाई, 2024 को सांतरागाछी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22170 सांतरागाछी रानी कमलापति-एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली गाड़ियां- दिनांक 06 एवं 08 जुलाई, 2024 को दुर्ग से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12823 दुर्ग-निज़ामुद्दीन संपर्क क्रांति एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग न्यू कटनी-कटनी-ओहन केबिन-वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी जंक्शन होकर चलेगी। 05, 07 एवं 09 जुलाई, 2024 को निज़ामुद्दीन से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12824 निज़ामुद्दीन-दुर्ग संपर्क क्रांति एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग-वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी जंक्शन-ओहन केबिन-कटनी-न्यू कटनी होकर चलेगी।

रेल प्रशासन यात्रियों को होने वाली असुविधा के लिए खेद व्यक्त करता है तथा सहयोग की आशा करता है।

संक्षिप्त समाचार

प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत अपूर्ण आवासों को जल्द से जल्द पूरा करें सीईओ डॉ. कन्नौजे

बालोद(विश्व परिवार)। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ संजय कन्नौजे ने जिले के गुण्डरदेही विकासखण्ड के विभिन्न ग्रामों में पहुँचकर प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत चल रहे निर्माण कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान श्री कन्नौजे ने गुण्डरदेही विकासखण्ड के ग्राम पंचायत पांगरी के प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वित हितग्राही श्रीमती गायत्री बाई, खोरबाहरा राम एवं श्री हीरामन से मिलकर आवास निर्माण कार्य के संबंध में चर्चा की। इसी तरह श्री कन्नौजे ने ग्राम पंचायत तमोरा एवं सुखरी के प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वित होने वाले हितग्राहियों से भी मुलाकात की। उन्होंने जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सहित तकनीकी सहायक एवं ग्राम सचिवों को प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत हितग्राहियों को होने वाली समस्याओं की जानकारी लेकर मानसून पूर्व अपूर्ण रह गए आवासों को जल्द से जल्द पूरा कराने के निर्देश दिए। डॉ संजय कन्नौजे ने ग्राम पंचायत पांगरी में मनरेगा अंतर्गत चल रहे कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने बाढ़ चैनल का पुनरूद्धार कार्यों का भौतिक निरीक्षण किया। इसके साथ ही गांव में पेयजल की समुचित उपलब्धत कराने जल जीवन मिशन, मनरेगा हितग्राहियों एवं उनकी मजदूरी भुगतान, पेंशन आदि के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने ग्रामीणों की मांग पर सहायक परियोजना अधिकारी मनरेगा को बाढ़ चैनल में रिटर्निंग वॉल तथा पौधरोपण करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने ग्राम पंचायत रूदा में निर्माणाधीन फिकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट (एफएसटीपी) के निर्माण को शीघ्र पूरा कराने के निर्देश दिए।

सर्प दंश से युवक की आकस्मिक मौत

रामानुजगंज(विश्व परिवार)। रामानुजगंज रामचंद्रपुर विकासखंड के पीपरपान पंचायत अंतर्गत चौराखाड़ गांव में सर्पदंश से एक 25 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गयी। मृतक का युवक का नाम उपेंद्र कुमार यादव उम्र 25 वर्ष बताया जा रहा है। जानकारी अनुसार बीते देर शाम तकरीबन 7:30 बजे सांप ने युवक को डंस लिया। जिसके बाद परिजनो ने युवक को आनन-फानन में रामानुजगंज अस्पताल में भर्ती करवाया, जहां से बेहतर इलाज के लिए बलरामपुर जिला अस्पताल रेफर किया गया। लेकिन इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई। पीएम पश्चात् परिजनों ने शव को घर ले आया और गमगीन माहौल में उसका अंतिम संस्कार किया गया । घटना से स्वजनों का रो-रोकर बुरा हाल है बताया जा रहा है की उपेंद्र कुमार यादव घर का इकलौता कमाऊ सदस्य था इसके आकस्मिक निधन से माता पिता ने इकलौता पुत्र खोया वहीं दूसरी ओर दो मासूम बच्चों का सर से पिता का शाया उठ गया है, उसकी पत्नी समेत से घर में दुख का पहाड़ टूट पड़ा है ।

वैगानार ने स्कूटी को मारी ठोकर, युवक कोमा में

कोरबा(विश्व परिवार)। गायत्री शक्तिपीठ के पास पिछली रात हुए स्कूटी सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है, वह फिलहाल कोमा में है। सीएसईबी पुलिस ने वैगानार चालक के विरूद्ध आईपीसी की धारा 279, 337 के अंतर्गत अपराध दर्ज किया है। चैकी प्रभारी भीमसेन यादव ने बताया कि मंगलवार की रात 10.30 बजे के लगभग गायत्री शक्तिपीठ के पास यह घटना हुई। यहां पर वैगानार कार संख्या सीजी-12एजी-9239 के चालक की लापरवाही से एक स्कूटी सवार युवक घायल हो गया। वह मौके पर गिरने के साथ बेहोश हो गया। इस दौरान लोगों की भीड़ लग गई। सूचना मिलने पर पुलिस यहां पहुंची। फौरी तौर पर पीडित को हास्पिटल भिजवाया गया। अब तक की सूचनाओं में पता चला है कि पीडित बेहोशी से बाहर नहीं आ सका है और स्थिति चिंताजनक है। चिकित्सकों ने उसे आब्जर्वेशन में रखा है।

कोयला कामगारों का बढ़ा वेतन

कोरबा(विश्व परिवार)। केंद्र में नई सरकार के कामकाज संभालने के 24 घंटों के अंदर कोल इंडिया के कर्मचारियों के डीए में बढ़ोतरी के आदेश जारी हो गए। कोल इंडिया के महाप्रबंधक गौतम बेनर्जी के हस्ताक्षर से जारी आदेश के मुताबिक नॉन एक्जीक्यूटिव कैडर के कर्मचारी वर्ग के वीडीए (वेरिएबल डियरनेस एलाउंस) को बढ़ाकर 16.9 फीसदी कर दिया गया है। कोल इंडिया के इस आदेश से एसईसीएल के अंतर्गत कार्यरत 35 हजार कर्मचारियों को फायदा होगा। एसईसीएल के जनसंपर्क अधिकारी डॉ.सनीश चंद्रा के मुताबिक कोल इंडिया द्वारा जिन कर्मचारियों के वीडीए में बढ़ोतरी की गई है उनमें सुपरवाइजर श्रेणी, क्लर्क, आपरेटर, माइनिंग सरदार और श्रमिक वर्ग शामिल है।

केशकाल विकासखंड में संचालित विकास कार्यों का कलेक्टर ने किया निरीक्षण

सामुदायिक पुस्कालय के लिए किया भूमि का चिन्हांकन

कोंडागांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर कुणाल दुदावत ने बुधवार को केशकाल विकासखंड में संचालित विभिन्न विकास कार्यों का निरीक्षण किया और आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने इस दौरान केशकाल में सामुदायिक पुस्तकालय के निर्माण के लिए भूमि का चिन्हांकन भी किया। कलेक्टर ने इस दौरान लैंप्स का निरीक्षण करते हुए खाद-बीज के आवेदन का तत्काल निराकरण करते हुए उसी दिन उपलब्ध कराने और स्टॉक पंजी और वितरण पंजी में जानकारी अद्यतन रखने के निर्देश दिए। उन्होंने केसीसी के आवेदन ग्राम पंचायत में ही ग्राम सेवक द्वारा प्राप्त करने के पश्चात लैंप्स में दर्ज कराने के

निर्देश दिए। कलेक्टर ने आडेंगा स्थित नर्सरी का निरीक्षण करते हुए इंटर क्रॉप तकनीक से पौधे - पुष्प उगाने के निर्देश दिए। उन्होंने नर्सरी मे पौधों की संख्या बढ़ाने, किसानों के लिए मुनगा और पपीता के बीज तैयार करने, चंदन और लीची के पेड़ लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने शेड नेट हाउस की मरम्मत के संबंध में भी निर्देशित किया। इसके साथ ही यहां जर्जर पुराने भवनो के विनष्टिकरण के निर्देश भी दिए। कलेक्टर ने इस दौरान ओंडरी में जल जीवन मिशन के तहत किए गए कार्य का घरों में जाकर निरीक्षण किया। उन्होंने आश्रित ग्राम नारना में पानी पहुंचाने के लिए 1200 मीटर पाइप लाइन बिछाने के लिए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी के कार्यपालन अभियंता को मांगपत्र देने के निर्देश विभाग के अनुविभागीय अधिकारी को दिए। उन्होंने इस दौरान गांव में बिजली की समस्या का निराकरण करने के लिए विद्युत विभाग के कार्यपालन अभियंता को गांव में पहुंचने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अविनाश भोई, अनुविभागीय दंडाधिकारी श्री अंकित चौहान सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने सभी विभागों के कार्यों की समीक्षा की

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जिले के कार्यों की समीक्षा समय सीमा बैठक में की। कलेक्टर श्री साहू ने खाद्य अधिकारी को निर्देश दिया कि जिन राशन दुकानों से वसूली कार्य किया जाना है, उन वसूलियों को शीघ्र करें। साथ ही राशन आबंटन का रिकार्ड सिर्फ एप या वेबसाइट लॉगिन में नही देखें, बल्कि मैदानी राशन दुकानों में जाकर क्रॉस चेकिंग करें। कलेक्टर ने खाद्य अधिकारी श्री ध्रुव को कहा कि ऐसे नागरिक जो वर्तमान में पलायन किए हैं, उनका ई श्रम कार्ड बनेगा की नहीं, जवाब में श्री ध्रुव ने जानकारी दी। कलेक्टर ने धान खरीदी केंद्रों से धान उठाव, भंडारण, राइस मिलरों को जारी डीओ, निराकरण आदि के संबंध में चर्चा की। बैठक में कलेक्टर ने कृषि के लिए खाद बीज वितरण, महतारी वंदन और पीएम किसान सम्मान निधि योजना में आधार का केवायसी और भूमि सीडिंग कराने की स्थिति की जानकारी लेकर कहा कि सभी महिला हितग्राही और किसान केवायसी और सीडिंग कराएं, ताकि योजनाओ का लाभ तुरंत मिले। कलेक्टर ने मनरेगा से जुड़े सभी कार्यों को करने के लिए कहा, जिसमें पशु शेड सहित अन्य कार्य शामिल है। बैठक में आंगनबाड़ी भवन निर्माण प्रारंभ और अप्रारंभ कार्य, जियो टैगिंग, सामुदायिक शौचालय, अमृतकाल विजन डॉक्यूमेंट 2047, सभी छूटे विभाग का आरटीआई लॉगिन पंजीयन के संबंध में समीक्षा किया गया।

जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने जिला जेल का किया औचक निरीक्षण

बंदियों की स्थिति, रहवास सहित अन्य सुविधाओं के संबंध में दिये दिशा निर्देश

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश दंतेवाड़ा एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री विजय कुमार होता ने गत दिवस दंतेवाड़ा जिला जेल का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने जिला जेल से संबंधित अधोसंरचना, बंदियों के बैरक, बंदियों के उपयोग हेतु जेल में बने शौचालय की स्थिति उनकी साफ सफाई, पाठशाला में भोजन बनाए जाने की व्यवस्था, भंडार

कक्ष तथा जेल में संधारित रजिस्टरों की समीक्षा की गहन समीक्षा की साथ ही उनके द्वारा बंदियों को उच्च गुणवत्ता की सामग्री को शत प्रतिशत उपलब्ध कराए जाने को भी कहा। इसके अलावा उन्होंने बैरक में छत से रिसाव की समस्या पाए जाने पर बरसात के पहले उसे अविलंब ठीक कराए जाने एवं जेल की शौचालय में नियमित साफ सफाई रखे जाने का निर्देश जेल अधीक्षक को दिया। इस दौरान प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने बंदियों से चर्चा कर उन्हें मिलने वाली सुविधाओं जैसे भोजन एवं स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधाओं की भी जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट दंतेवाड़ा श्री डी. पी.सिंह दांगी, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती अपूर्वा दांगी एवं जेल अधीक्षक श्री जी.एस. शोरी उपस्थित रहे।

विधायक नेताम के निर्देश पर शहर के मुख्य मार्ग में लीकेज

कांकेर(विश्व परिवार)। कांकेर विधायक आशाराम नेताम द्वारा लगातार विभिन्न क्षेत्रों का सघन दौरा कर आम लोगों की समस्याओं से अवगत हो रहे हैं और उनके सार्थक प्रयासों एवं निरंतर सक्रियता से क्षेत्र के आम नागरिकों के विभिन्न समस्याओं का त्वरित निराकरण हो रहा है। उनके द्वारा समस्याओं के निराकरण हेतु अधिकारियों को निर्देशित कर सभी आवश्यक कार्यालयीन प्रक्रियाओं का समय पर पूर्ण करवाकर स्वयं उपस्थित होकर कार्य करवा रहे हैं। इसी क्रम में विधायक श्री नेताम के प्रयासों से आज शहर के मुख्य मार्ग में लीकेज की समस्या से शहरवासियों को राहत मिली है। उल्लेखनीय है कि विगत लगभग 15-20 दिनों से एलआईसी के सामने एवं कलेक्ट्रेट तिराहा पर मुख्य मार्ग में पुरानी लाइन से लीकेज की शिकायत बनी हुई थी, जिस पर संज्ञान

लेते हुए विधायक श्री नेताम द्वारा कुछ दिवस पूर्व उक्त स्थल का निरीक्षण किया गया एवं तत्काल उसे ठीक करवाने के लिए पीडब्ल्यूडी एवं नगर पालिका के अधिकारियों को निर्देशित किया गया था।

कलेक्ट्रेट परिवार ने उपायुक्त डॉ आनंद सिंह के स्थानांतरण पर दी भावभीनी विदाई

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। कलेक्टोरेट कार्यालय के तृतीय तल सभा कक्ष में कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी की अध्यक्षता में आयोजित समय सीमा बैठक में उन्होंने विभिन्न विभागों के कार्यों को विस्तारपूर्वक समीक्षा करते हुए अधिकारियों को सभी प्रकरणों का निराकरण शीघ्र सुनिश्चित करने को कहा। समीक्षा के अंतर्गत प्रधानमंत्री आवास योजना, शासन की महत्वाकांक्षी योजना''नियद नेल्लानार', शत-प्रतिशत आधार कार्ड, आयुष्मान कार्ड एवं केवाईसी, वृक्षारोपण की तैयारियां इत्यादि विषय शामिल थे। इसके पूर्व सभा कक्ष में आदिवासी विकास विभाग उपायुक्त डॉ आनंद सिंह के स्थानांतरण के अवसर पर जिला प्रशासन परिवार ने भावभीनी विदाई दी गई। ज्ञात हो कि डॉ सिंह का स्थानांतरण बीजापुर हो गया है। इस मौके पर डॉ सिंह के कार्यकाल का स्मरण करते हुए कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी ने कहा कि दंतेवाड़ा क्षेत्र बहुत संवेदनशील क्षेत्र है और इस क्षेत्र में जनजातीय अधिकारों की सुरक्षा एक अहम जिम्मेदारी होती है। अपने पूरे कार्यकाल में डॉ सिंह ने अपना कार्य पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाया है। मैं उनकी आने वाली उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। इसके अलावा अन्य अधिकारीगण ने भी डॉ सिंह के साथ किये कार्यों का अनुभव साझा किया। इस मौके पर उपायुक्त डॉ आनंद सिंह ने दंतेवाड़ा जिले किये गए कार्यों को सबके बीच साझा करते हुए कहते है कि इस जिले में मुझे बहुत कुछ कार्यों के द्वारा सीखने का मौका भी मिला है। नये जिले में यहां का अनुभव कारगर रहेगा, इसके साथ ही नये उपायुक्त श्री के. एस. मसराम का भी स्वागत किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्री कुमार बिश्वरंजन, एसडीएम श्री जयंत नाहटा, अपर कलेक्टर श्री राजेश पात्रे, संयुक्त कलेक्टर श्री हिमाचल साहू सहित जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद थे।

कलेक्टर कुणाल दुदावत ने किया केशकाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण

बीपीएचयू के धीमे निर्माण पर सीजीएमएससी के इंजीनियर को नोटिस

कोण्डागांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर कुणाल दुदावत ने बुधवार को केशकाल स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया। उन्होंने इस दौरान क्षेत्र के लोगों को बेहतर उपचार सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने यहां आंखों के ऑपरेशन की सुविधा के साथ ही गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए सोनोग्राफी की सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिए। उन्होंने यहां नए ऑपरेशन थियेटर के निर्माण के लिए भी स्थान का चिन्हांकन किया। कलेक्टर ने स्वास्थ्य केंद्र में स्वच्छता पर विशेष जोर देने को कहा। उन्होंने इस दौरान यहां भर्ती मरीजों से बातचीत कर स्वास्थ्य केंद्र में मिलने वाली सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। मरीजों ने यहां प्रदान की जा रही सेवाओं से संतुष्टि जताई। कलेक्टर ने यहां निर्माणाधीन ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट के निर्माण की धीमी गति पर नाराजगी जाहिर की और छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन के अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने इसके साथ ही गढ़ सिलियारा में नए शहरी आयुष्मान आरोग्य मंदिर के निर्माण के लिए भी स्थान का चिन्हांकन किया।इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अविनाश भोई, अनुविभागीय दंडाधिकारी अंकित चौहान, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की जिला कार्यक्रम प्रबंधक श्रीमती भावना महलवार, केशकालजनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी रामेश्वर महापात्रसहित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

कार्यालय मुख्य अभियंता
लो.नि.वि., राष्ट्रीय राजमार्ग परिक्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

दिनांक 10.06.2024

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा आमंत्रित की जाती है :-

क्र.	नि.आ.सू. क्र./ दिनांक	सिस्टम आईडी क्र.	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत
1.	84/CE/NH/ TC/44- 28/2021 (6th Call)	2024_ MoRTH_ 810884_1	Construction of Two-Lane with paved shoulder for improvement of geometry from km 50.290 to km 53.330 of NH-353 (Mahasamund-Khariyar Road section) in the state of Chhattisgarh.	Rs. 9.83/- Crore (i/c GST)
2.	85/CE/NH/ TC/44- 04/2022 (5th Call)	2024_ MoRTH_ 810887_1	Construction of High level bridge | across Mallin Nalla in km 90.460 of NH- 130B in the state of Chhattisgarh.	Rs. 7.54/- Crore (i/c GST)
3.	86/CE/NH/ TC/44- 23/2024	2024_ MoRTH_ 810911_1	Reconstruction of Minor Bridges at Km 99.800 to Km 100.600, Km 98.400 to | 98.800 (Geedam Nalla) & Major Bridge | at Km 59.000 To 59.600 (Guter Nalla) on NH-30 (Old NH-221) Jagdalpur-Sukma-Konta Road in the State of Chhattisgarh on EPC Mode.	Rs. 15.96/- Crore (i/c GST)

निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि दिनांक 10.07.2024 सुबह 11:00 बजे तक है।

2. उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (MORT&H's) के ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eprocure.gov.in/eprocure/app से डाउनलोड की जा सकती है।

मुख्य अभियंता,
लो. नि. वि. राष्ट्रीय राजमार्ग परिक्षेत्र,
रायपुर (छ.ग.)

G- 242500258/2

व्यापार समाचार

वेवर्क के दिवालियापन से बाहर निकलने के बाद कंपनी के सीईओ डेविड टॉली ने दिया इस्तीफा

नईदिल्ली(एजेंसी)। वेवर्क के दिवालियापन से उभरने के बाद कंपनी के सीईओ डेविड टॉली ने इस्तीफा दे दिया। यह कंपनी की पुनर्गठन प्रक्रिया के अंत का प्रतीक है जिसके कारण कंपनी को कई स्थानों पर बंद करना पड़ा था। कंपनी ने कमर्शियल रियल एस्टेट इंडस्ट्री के दिग्गज जॉन सैंटोरा को अपना नया प्रमुख नियुक्त किया। उन्होंने हाल ही में ग्लोबल रियल एस्टेट सेवा फर्म कुशमैन एंड वेकफील्ड में ट्राई-स्टेट चेयरमैन के रूप में कार्य किया। कभी अमेरिका का सबसे मूल्यवान स्टार्टअप रहा वेवर्क तेजी से विस्तार करता गया, लेकिन महंगे लीज़ और कोरोना महामारी के कारण मांग में तेज गिरावट के कारण भारी नुकसान उठाना पड़ा। इसके बाद नवंबर 2023 में कंपनी ने दिवालियापन संरक्षण के लिए आवेदन किया। वेवर्क को पिछले महीने के अंत में एक अमेरिकी दिवालियापन न्यायाधीश से पुनर्गठन योजना की मंजूरी मिली, जिससे इसे 4 बिलियन डॉलर का कर्ज खत्म करने और अपनी इक्विटी को ऋणदाताओं और रियल एस्टेट टेक्नोलॉजी कंपनी यार्डी सिस्टम्स के समूह को सौंपने की अनुमति मिली। टॉली फरवरी 2023 में बोर्ड सदस्य के रूप में वेवर्क में शामिल हुए। उन्होंने अक्टूबर में सीईओ का पद संभाला और कंपनी को एक मुश्किल समय से बाहर निकाला, जिसमें प्रमुख परिचालन और वित्तीय सुधार शामिल थे। उनके कार्यकाल के दौरान, वेवर्क ने अपने रियल एस्टेट पोर्टफोलियो में तेजी से कमी की, 190 से अधिक पट्टों पर फिर से बातचीत की, 170 से अधिक गैर-लाभकारी स्थानों से बाहर निकला, और वार्षिक किराया और किरायेदारी खर्च में 800 मिलियन डॉलर से अधिक की कटौती की। इसने अपने भविष्य के विकास को समर्थन देने के लिए नई इक्विटी पूंजी में 400 मिलियन भी सुरक्षित किए, जबकि अपने खर्चों में 30त्न से अधिक की कटौती की। यह स्टार्टअप सॉफ्टबैंक ग्रुप के सबसे बड़े दांवों में से एक था, जिसके पास पिछले नवंबर में लगभग 71त्न हिस्सेदारी थी, हालांकि पिछले कुछ वर्षों में इसने अपना अधिकांश निवेश लिख लिया था। वेवर्क ने अप्रैल में सह-संस्थापक और पूर्व मालिक एडम न्यूमैन के 650 मिलियन के प्रस्ताव को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि उनके प्रस्ताव में ऋणदाताओं का दिल जीतने के लिए पर्याप्त उच्च कीमत की पेशकश नहीं की गई है।

खुदरा महंगाई के आंकड़े से पहले बाजार में तेजी, सेंसेक्स 246 अंक उछला

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार बुधवार को तेजी के साथ खुले। बाजार के ज्यादातर सूचकांक हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं। सुबह 9¬30 पर सेंसेक्स 246 अंक या 0.32 प्रतिशत बढ़कर 76,702 अंक पर और निफ्टी 87 अंक या 0.37 प्रतिशत बढ़कर 23,352 अंक पर था। बाजार में सकारात्मक रुझान बना हुआ है। खबर लिखे जाने तक एनएसई पर 1,660 शेयरों में तेजी और 328 में गिरावट थी। निफ्टी मिडकैप 100 सूचकांक 307 अंक या 0.57 प्रतिशत बढ़कर 53,974 अंक और निफ्टी स्मॉलकैप 100 सूचकांक 118 अंक या 0.68 प्रतिशत बढ़कर 17,690 अंक पर है। बाजार में उतार-चढ़ाव दर्शाने वाला इंडिया वीआईएक्स दो प्रतिशत की गिरावट के साथ 14.45 पर है। जानकारों का कहना है कि बुधवार को खुदरा महंगाई और औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) के आंकड़े आने वाले हैं। इसका बाजार पर असर देखने को मिल सकता है। पिछले दिनों इंडिया वीआईएक्स में 32 प्रतिशत की गिरावट हुई है जो दिखाता है कि बाजार में स्थिरता बढ़ रही है। निवेशकों को न्यूज़ फ्लो और मजबूत शेयरों पर ही ध्यान देना चाहिए। सेंसेक्स में एचसीएल, टेक महिंद्रा, विप्रो, पावर ग्रिड, टाटा स्टील और टीसीएस में सबसे ज्यादा तेजी रही। वहीं, एशियन पेंट्स, एचयूएल, टाइटन, एलएंडटी, इंडसइंड बैंक और नेस्ले इंडिया में सबसे ज्यादा गिरावट है। एशिया के ज्यादातर बाजार लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। टोक्यो और हांगकांग के बाजारों में 1.5 प्रतिशत तक की गिरावट है। वहीं, शंघाई, जाकार्ता और बैंकॉक के बाजारों में मामूली बिकवाली है। हालांकि, सोल के बाजार हरे निशान में हैं। अमेरिका के बाजार मंगलवार को मिले-जुले बंद हुए थे। बुधवार को ब्याज दरों को लेकर अमेरिकी फेड के निर्णय का ऐलान होगा। इसका असर गुरुवार को भारतीय बाजारों पर देखने को मिल सकता है। कच्चे तेल का बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 82 डॉलर प्रति बैरल और अमेरिकी डब्ल्यूटीआई क्रूड 78 डॉलर प्रति बैरल पर है।

विक्स ने पवरहाउस रनवीर सिंह के साथ किया सबसे बड़ी खबर का खुलासा

रायपुर। विक्स ने पवरहाउस ब्रांड एंबेसडर रनवीर सिंह के साथ आज विक्स की सबसे बड़ी खबर विक्स की गोली अब हो गई बड़ी की घोषणा की जिसमें लगभग दो दशकों में भारत के प्रतिष्ठित त्रिकोणीय विक्स कफ ड्रप्स के डबल पवर्ड परिवर्तन का अनावरण किया गया। पीएंडजी इंडिया में कैटेगरी लीडर, कंज़्यूमर हैल्थकेयर, साहिल सेठी ने कहा ब्रांड की प्रतिष्ठित जिंगल, विक्स की गोली लो खिच खिच दूर करो फौरन उस पुराने समय की यादों में ले जाती है, जब विक्स कफ ड्रप्स ने सन 1960 से भारतीयों की कई पीढ़ियों को बिना खिच-खिच के बोलने में मदद की थी। हमारे ग्राहक क्या चाहते हैं, यह समझकर और उनके द्वारा दी गई जानकारी को अपने उत्पाद के फर्मुलेशन और पैकेजिंग में शामिल करके इस विरासत को मजबूत बनाने की प्रतिबद्धता के साथ हम दशकों में सबसे बड़ी खबर पेश करने के लिए उत्साहित हैं कि हम अपनी प्रतिष्ठित त्रिकोणीय विक्स कफड्रप्स का पहला डबल पवर्ड परिवर्तन, विक्स डबल पवर कफ ड्रप्स लेकर आए हैं। खाँसी और गले की खराश से राहत पाने के लिए बड़े आकार में अपनी पसंदीदा कफ ड्रप लेने की ग्राहकों की जरूरत और उनकी प्रतिक्रिया के आधार पर बनाई गई हमारी 'विक्स डबल पवर कफड्रप्स' एक बड़ी गोली है, जो बड़ी राहत प्रदान करती है। अब विक्स की गोली खाओ, बड़ी राहत पाओ।'' ब्रांड के बड़ी राहत के वायदे के बारे में ड. जसप्रीत कोच्चर, डायरेक्टर, विक्स रिसर्च एंड डेवलपमेंट ने कहा नया विक्स डबल पवर कफड्रप खाँसी और खराब गले से राहत देने के लिए एक बेहतर उत्पाद है। इसमें प्रभावशाली और प्रसिद्ध आयुर्वेदिक तत्वों, जैसे मेंथल, यूकेलिप्टस तेल और कपूर का प्रमाणित मिश्रण है। यह नया डिज़ाइन किया गया फर्मुलेशन 2म मेंथल के साथ ज्यादा शक्तिशाली है और यह तीन वैरिएंट्स - ठंडक देने वाले मेंथल, आरामदायक शहद और राहत देने वाली अदरक में आता है, जो भारतीय ग्राहकों के साथ विकसित किया और परखा गया है।

फीफा विश्व कप क्वालीफायर में भारत के साथ हुई बेईमानी

दोहा(एजेंसी)। फीफा विश्व कप क्वालीफायर में खराब रेफरिंग के कारण भारतीय फुटबॉल टीम को कतर से 1-2 से हार झेलनी पड़ी। एक बार फिर भारत फीफा विश्व कप के मंच पर इतिहास रचने से चूक गया। मैच के बाद भारत के मुख्य कोच इगोर स्टिमक ने टीम के साथ हुई बेईमानी पर आवाज उठाई है। भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम के मुख्य कोच इगोर स्टिमक ने फीफा विश्व कप क्वालीफायर राउंड 2 मैच में कतर के विवादास्पद बराबरी के गोल को अपनी टीम के साथ अन्याय करार दिया। भारत का फीफा विश्व कप क्वालीफायर के तीसरे दौर में क्वालीफाई करने का सपना एशियाई चैम्पियन कतर से विवादास्पद तरीके से 2-1 से हारने के बाद टूट गया। यह पूरा मामला मैच के 73वें मिनट में हुआ। भारतीय गोलकीपर गुरप्रीत ने कतर के खिलाड़ी युसूफ अयमन का एक हेडर रोका। इसके बाद गेंद गोल पोस्ट के पास लाइन के पार चली गई लेकिन अल हाशमी बॉल को अंदर लेकर आ गए, ज ?स पर अयमन ने गोल कर दिया। इसके बाद भारतीय खिलाड़ियों ने खेलना रोक दिया लेकिन रेफरी ने सीटी नहीं बजाई और कतर के खाते में गोल दे दिया। रिप्ले में साफ दिख रहा था कि फुटबॉल लाइन को क्रॉस कर चुकी है, यानी यहां पर खेल रुक जाना चाहिए था। इस गलत फैसले के कारण भारत का ध्यान भटक गया और उसने अपनी लय खो दी। मैच में शुरुआत में आगे चल रही भारत 1-1 से बराबरी के बाद संघर्ष करता नजर आया। फिर, एशियाई चैम्पियन कतर ने 85वें मिनट में अहमद अल रावी की बदौलत अपना दूसरा गोल कर दिया और मैच अपने नाम करने में सफल रहा। मैच के बाद भारतीय टीम के मुख्य कोच स्टिमक ने कहा, इस मुकाबले में मेरे खिलाड़ियों के साथ अन्याय हुआ है। हम इस मैच को जीतने और तीसरे दौर के लिए क्वालीफाई करने के बहुत करीब थे, लेकिन एक गलत फैसले के कारण ऐसा नहीं हुआ। कतर को बधाई। मैं कहूंगा कि दोनों देश अपने भविष्य पर गर्व कर सकते हैं क्योंकि सभी खिलाड़ियों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। उन्होंने दमदार फुटबॉल खेला और यह स्पष्ट था कि दोनों टीमों ने मैच का आनंद लिया। कोच ने आगे कहा, कतर भाग्यशाली रहा, खास तौर पर इसलिए क्योंकि वे 0-1 से पिछड़ने के बाद वापस आए। मैंने रीप्ले देखा है। वह गेंद लाइन से बाहर थी लेकिन फिर भी गोल दिया गया। आज के फुटबॉल में ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि उस गोल ने इस मैच में सब कुछ बदल दिया। यह कतर के साथ या किसी भी टीम के साथ हो सकता था, इसलिए मैं कोई बहाना नहीं ढूढ रहा हूं। मुझे बस दुख है कि जब आपके पास 23 लड़के हैं जो वास्तव में कड़ी मेहनत कर रहे हैं और कुछ हासिल करने के सपने को जी रहे हैं, लेकिन कुछ गलत फैसले के कारण उनका सपना टूट जाता है।

सोना हुआ महंगा, चांदी भी चमकी

नईदिल्ली(एजेंसी)। सोने चांदी के वायदा कारोबार में आज तेजी देखने को मिल रही है। दोनों के वायदा भाव आज तेजी के साथ खुले। खबर लिखे जाने के समय सोने के वायदा भाव 71,600 रुपये के करीब, जबकि चांदी के वायदा भाव 89,300 रुपये के करीब कारोबार कर रहे थे। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। सोने के वायदा भाव की शुरुआत आज तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त कॉन्ट्रैक्ट आज 33 रुपये की तेजी के साथ 71,523 रुपये के भाव पर खुला। खबर लिखे जाने के समय यह कॉन्ट्रैक्ट 80 रुपये की तेजी के साथ 71,570 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 71,594 रुपये के भाव पर दिन का उच्च और 71,523 रुपये के भाव पर दिन का निचला स्तर छू लिया। सोने के वायदा भाव ने पिछले महीने 74,442 रुपये के भाव पर सर्वोच्च स्तर छू लिया था। चांदी के वायदा भाव की शुरूआत आज तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क जुलाई कॉन्ट्रैक्ट आज 587 रुपये की तेजी के साथ 89,250 रुपये पर खुला। खबर लिखे जाने के समय यह कॉन्ट्रैक्ट 654 रुपये की तेजी के साथ 89,317 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 89,321 रुपये के भाव पर दिन का उच्च और 89,250 के भाव पर दिन निचला स्तर छू लिया। पिछले महीने चांदी के वायदा भाव ने 96,493 रुपये के भाव पर सर्वोच्च स्तर छू लिया था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेज रही। कॉमेक्स पर सोना 2,334 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला क्लोजिंग प्राइस 2,326.60 डॉलर प्रति औंस था।

निर्मला सीतारमण ने वित्त मंत्रालय का कार्यभार संभाला

नई दिल्ली(एजेंसी)। निर्मला सीतारमण ने लगातार दूसरे कार्यकाल के लिए वित्त मंत्रालय का कार्यभार बुधवार को संभाल लिया। वह जल्द ही वित्त वर्ष 2025 के लिए अंतिम बजट पेश करेंगी जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नीत तीसरी सरकार की प्राथमिकता तथा विकसित भारत की दिशा तय करेगा। नॉर्थ ब्लॉक स्थित कार्यालय में वित्त सचिव टी. वी. सोमनाथन और अन्य शीर्ष अधिकारियों ने सीतारमण का स्वागत किया। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी भी इस दौरान मौजूद थे। चौधरी ने मंगलवार की शाम को पदभार ग्रहण किया। आधिकारिक बयान के अनुसार, कार्यभार संभालने के बाद वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों के मंत्री को विभिन्न विभागों के सचिवों द्वारा मौजूदा नीतिगत मुद्दों की जानकारी दी गई। सीतारमण ने कहा कि सरकार अपने नागरिकों के ''जीवन की सुगमता'' सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और इस संबंध में आगे भी कदम उठाती रहेगी। उन्होंने कहा कि 2014 से किए गए सुधार जारी रहेंगे, जिससे भारत व्यापक आर्थिक स्थिरता तथा वृद्धि हासिल करेगा। उन्होंने वैश्विक चुनौतियों के बीच हाल के वर्षों में भारत की सराहनीय वृद्धि गाथा को रेखांकित किया और कहा कि आने वाले वर्षों के लिए आर्थिक दृष्टिकोण आशावादी है। उन्होंने विभागों से राजग सरकार के विकास एजेंडे को नए जोश के साथ आगे बढ़ाने तथा प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' के सपने को साकार करने के लिए उत्तरदायी नीति निर्माण सुनिश्चित करने का आग्रह किया। सीतारमण ने कहा कि सरकार ' सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' में विश्वास रखती है। उन्होंने मजबूत तथा जीवंत अर्थव्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए उद्योग जगत के लोगों, नियामकों और नागरिकों सहित सभी हितधारकों से निरंतर समर्थन व सहयोग का आह्वान किया। सीतारमण लगातार सातवां बजट और लगातार छठा पूर्ण बजट पेश करके एक रिकॉर्ड बनाएंगी। वित्त वर्ष 2024-25 के लिए पूर्ण बजट अगले महीने, नवगठित 18वीं लोकसभा में पेश किए जाने की संभावना है। सीतारमण के नाम मोदी सरकार में लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए मंत्री के रूप में शामिल होने वाली पहली महिला बनने का रिकॉर्ड भी है। अपने राजनीतिक करियर में उन्होंने कई बड़ी उपलब्धियां हासिल कीं। 2017 में वह पहली महिला रक्षा मंत्री बनी। इससे पहले वह उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री थीं। अरुण जेटली (वित्त मंत्री 2014-19) के बीमार होने पर सीतारमण ने 2019 के आम चुनाव के बाद नव निर्वाचित मोदी सरकार में वित्त विभाग का प्रभार संभाला था।

ओला इलेक्ट्रिक के आईपीओ को मिली मंजूरी 7,250 करोड़ रुपये जुटाने की योजना

नईदिल्ली(एजेंसी)। भवीश अग्रवाल की इलेक्ट्रिक वाहन स्टार्टअप ओला इलेक्ट्रिक को 7,250 करोड़ रुपये के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) से मंजूरी मिल गई है। इस मामले से अवगत सूत्रों ने यह जानकारी दी। ओला इलेक्ट्रिक आईपीओ लाने वाली देश की पहली इलेक्ट्रिक वाहन कंपनी होगी। सूत्रों ने कहा कि सेबी से मंजूरी मिलने और बाजार में तेजी को देखते हुए कंपनी एक महीने के भीतर अपना आईपीओ ला सकती है। मगर स्वतंत्र रूप से इसकी पुष्टि नहीं हो पाई है। इस मुद्दे पर जानकारी के लिए बार-बार कोशिश करने के बावजूद कंपनी से संपर्क नहीं हो सका। इस आईपीओ के तहत 5,500 करोड़ रुपये तक के ताजा शेयर जारी किए जाएंगे। इसके अलावा इसमें ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) के तहत करीब 1,750 करोड़ रुपये मूल्य के 9.5 करोड़ से अधिक शेयर शामिल होंगे। ओला के संस्थापक और मुख्य कार्याधिकारी भवीश अग्रवाल आईपीओ के तहत करीब 4.74 करोड़ शेयर यानी करीब 3.48 फीसदी हिस्सेदारी बेचेंगे। आईपीओ के जरिये अपनी हिस्सेदारी बेचने वाले अन्य शेयरधारकों में इंडस ट्रस्ट, अल्पाइन अपॉर्चुनिटी फंड, डीआईजी इन्वेस्टमेंट, इंटरनेट फंड 3 (टाइगर ग्लोबल), मैकरिची इन्वेस्टमेंट्स, मैट्रिक्स पार्टनर्स, सॉफ्टबैंक विजन फंड, अल्फा वेव वेंचर्स और टेकने प्राइवेट वेंचर्स शामिल हैं। ओला इलेक्ट्रिक का आईपीओ कुछ कारणों से अनोखा है। पिछले कई दशकों में यह पहला अवसर होगा जब कोई दोपहिया वाहन बनाने वाली कंपनी अपने आईपीओ के साथ पूंजी बाजार में दस्तक देगी। इसके अलावा अग्रवाल पहली बार किसी कंपनी को सूचीबद्ध कराने जा रहे हैं। कंपनी 7 से 8 अरब डॉलर के मूल्यांकन का लक्ष्य रख रही है। ओला इलेक्ट्रिक ने 2017 में ईवी कारोबार में दस्तक दी थी और वित्त वर्ष 2024 में 35 फीसदी से अधिक बाजार हिस्सेदारी के साथ वह इस बाजार की अग्रणी कंपनी बन चुक है। वाहन पोर्टल के अनुसार, ओला इलेक्ट्रिक की बाजार हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2023 में 21 फीसदी से बढ़ी है।

सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना रहेगा भारत: वर्ल्ड बैंक

नई दिल्ली(एजेंसी)। वर्ल्ड बैंक की ओर से कहा गया है कि भारत अगले तीन साल में 6.7 प्रतिशत की विकास दर से आगे बढ़ेगा। मजबूत घरेलू मांग, निवेश में उछाल और सर्विसेज सेक्टर में अच्छी गतिविधि के चलते भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना रहेगा। ग्लोबल इकोनोमिक प्रोस्पेक्ट्स रिपोर्ट में वर्ल्ड बैंक ने वित्त वर्ष 2025 में भारत के लिए अपने विकास पूर्वानुमान को 6.6 प्रतिशत पर बरकरार रखा है। इसने कहा कि भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढ़ने वाला देश बना रहेगा, हालांकि इसके विस्तार की गति थोड़ी धीमी हो सकती है। वर्ल्ड बैंक ने कहा, वित्त वर्ष 2023-24 में अच्छी विकास दर के बाद, वित्त वर्ष 2024-25 से अगले तीन वित्तीय वर्षों के लिए औसतन 6.7 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान है। वित्त वर्ष 2026 और वित्त वर्ष 2027 के लिए वर्ल्ड बैंक ने भारत की अर्थव्यवस्था के क्रमश: 6.7 प्रतिशत और 6.8 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान लगाया है। वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट में कहा गया है, कृषि उत्पादन में सुधार और मुद्रास्फीति में गिरावट से निजी खपत वृद्धि को लाभ मिल सकता है। चालू व्यय को कम करने के सरकार के लक्ष्य के अनुरूप सरकारी खपत में थोड़ी धीमी हो सकती है। इससे पहले अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 2024-25 के लिए भारत के विकास पूर्वानुमान को 6.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 6.8 प्रतिशत कर दिया था। आरबीआई ने पिछले हफ्ते चालू वित्त वर्ष के लिए भारत के जीडीपी विकास पूर्वानुमान को 7 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.2 प्रतिशत कर

अदाणी फाउंडेशन ने एसीसी चिल्हाटी साइट पर मोबाइल हेल्थ यूनिट के साथ बिलासपुर के 16 गांवों में घर-घर जाकर लोगों को उपलब्ध कराई स्वास्थ्य सेवाएं

बिलासपुर : विविधीकृत अदाणी पोर्टफोलियो की सीमेंट एवं निर्माण सामग्री कंपनी, एसीसी लिमिटेड, अपने परिचालन वाले क्षेत्र में ग्रामीण समुदायों के लिए आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। एसीसी, अदाणी फाउंडेशन के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ के बिलासपुर के मस्तूरी तहसील में एसीसी चिल्हाटी साइट के आसपास के गांवों में मोबाइल हेल्थ यूनिट (एमएचयू) पहल ज़रिये स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया करा रही है। इस कार्यक्रम ने अब तक 13 पंचायतों को महत्वपूर्ण चिकित्सा सेवाएं प्रदान की हैं, जिसमें 16 गांव शामिल हैं, और 7,400 से अधिक निवासियों को आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिला है।

एमएचयू अपने केंद्र के आस-पास के 20 किलोमीटर के दायरे में सेवा प्रदान करता है, और प्रतिदिन 2-3 गांवों का दौरा करता है। इस पहल के ज़रिये कुल लाभार्थियों में से 471 लोगों के लिए उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) और 290 लोगों के लिए मधुमेह (डायबिटीज़) का निदान किया गया है, जिससे विभिन्न गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान कर उनका समाधान करने में कार्यक्रम की प्रभावशीलता को दर्शाता है। उपचार के उच्च मानकों को बनाए रखते हुए, एमएचयू स्वास्थ्य समस्याओं के सटीक निदान और उपचार के लिए बेहद ज़रूरी साबित हुआ, खासकर उन रोगियों के लिए जो अपने स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) से पर्याप्त उपचार प्राप्त नहीं कर पाए हैं।

इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवा पहल के तहत, सीएसआर टीम ने भुरकुंडा, गोड़ाडीह, बोहरडीह, लोहारसी और विधीयाडीह गांवों में एक नेत्र जांच शिविर भी आयोजित किया। शिविर में 972 रोगी लाभान्वित हुए और यहां जांच, चश्मा तथा उपचार सहित मुफ्त नेत्र देखभाल सेवाएं प्रदान की गईं। साथ ही, 168 प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की आंखों के फ्लू के लिए जांच और उपचार भी किया गया। यह पहल हेल्पएज इंडिया के साथ मिलकर की गई है। एसीसी और अदाणी फाउंडेशन एमएचयू के ज़रिये स्वस्थ जीवन को बढ़ावा दे रहे हैं, जिससे वंचित समुदायों की ज़रूरतों को पूरा कर ग्रामीण तथा दूरदराज़ के इलाकों में आवश्यक स्वास्थ्य सेवा पहुंचाने के प्रति इनकी प्रतिबद्धता ज़ाहिर होती है।

CDRI और MEA ने क्वाड इंफ्रास्ट्रक्चर वर्किंग ग्रुप के तहत 'स्ट्रेंथनिंग कैपेसिटी ऑफ पावर सेक्टर प्रैक्टिशनर्स इन द इंडो-पैसिफिक रीजन विषय पर आयोजित की वर्कशॉप

नई दिल्ली: CDRI और भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने 4 से 7 जून 2024 के बीच नई दिल्ली में 'स्ट्रेंथनिंग कैपेसिटी ऑफ पावर सेक्टर प्रैक्टिशनर्स इन द इंडो-पैसिफिक रीजन टेक्निकल वर्कशॉप अंडर द क्वाड इंफ्रास्ट्रक्चर कोऑर्डिनेशन ग्रुप' का आयोजन किया। इस चार दिवसीय वर्कशॉप का उद्देश्य इंडो-पैसिफिक रीजन में आने वाली आपदाओं को रोकने और आपदा से जुड़े जोखिमों को कम करने की दिशा में पावर सेक्टर की आपदा से निपटने की तैयारी और प्रबंधन नीतियों को मजबूत करना था। इस वर्कशॉप में हुई प्रमुख चर्चाओं में क्लाइमेट रिस्क डेटा एवं गाइडलाइंस, बिजली से जुड़ी संपत्तियों पर खतरे का मूल्यांकन, रिजीलिएंस प्लानिंग एवं इन्वेस्टमेंट, बुनियादी ढांचे की मजबूती से जुड़ी केस स्टडी, और आपदा से सुरक्षित बुनियादी ढांचे को प्रदर्शित करने के लिए साइट का दौरा आदि जैसे विषय शामिल रहे। अमित प्रोथी, डायरेक्टर जनरल, कॉएलीशन फॉर डिजास्टर रिजीलिएंट इंफ्रॉक्स्ट्रक्चर ने कहा, CDRI को क्वाड इन्फ्रास्ट्रक्चर कोऑर्डिनेशन ग्रुप को समर्थन देने के लिए भारत सरकार के साथ जुड़ने पर हमें बेहद गर्व है। यह वर्कशॉप अपनी क्षेत्रीय विशेषज्ञता का भरपूर लाभ उठाएगी, जिससे इंडो-पैसिफिक्क क्षेत्र में आपदा से सुरक्षित पावर इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने के तरीके को बेहतर तरीके से समझा जा सके। नागराज नायडू काकनूर, संयुक्त सचिव (अमेरिका), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा, पावर सेक्टर को फिजिकल और जलवायु से जुड़ी आपदाओं की भारी कीमत चुकानी पड़ती है। आज हम जो पावर जेनेरेशन प्लांट तैयार कर रहे हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 14 जून 2024

विधायक अनुज शर्मा ने कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह से की चर्चा

रायपुर (विसं)। नगर पंचायत, ख़रोरा, ज़िला रायपुर छत्तीसगढ़ का आज कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने नगर पंचायत कार्यालय में कार्यों की जाँच की। निरीक्षण के दौरान क्षेत्र के विधायक अनुज शर्मा से मुलाक़ात हुआ श्री शर्मा ने कलेक्टर डॉ. सिंह से क्षेत्र में चल रहे शासन के योजनाओं के क्रियान्वयन पर चर्चा की। उन्होंने ख़रोरा क्षेत्र के विकास, सड़को का निर्माण, सुव्यवस्थित सड़क नियोजन, जल निकासी, बाजारों को व्यवस्थित करने की बात कही।

संक्षिप्त समाचार

जल संरक्षण व संवर्धन पर हेतु रायपुर जिला प्रशासन की पहल- 'मेरी जिंदगी पानी की बूंदों से' कार्यशाला आज शहीद स्मारक भवन में

रायपुर (विश्व परिवार)। जल संरक्षण व संवर्धन के सम्यक प्रयासों को नया आयाम देने जिला प्रशासन रायपुर के मार्गदर्शन में मेरी जिंदगी पानी की बूंदों से कार्यशाला का आयोजन 14 जून मध्यान्ह 12 बजे से शहीद स्मारक भवन में किया जा रहा है। इस कार्यशाला में देश के ख्यातिलब्ध पर्यावरणविद् और पॉन्डमैन के नाम से मशहूर श्री रामवीर तंवर विशेष रूप से सम्मिलित होने दिल्ली से आ रहे हैं। इस कार्यशाला में भू-जल व वर्षा जल संरक्षण की दिशा में लम्बे समय से अपनी सेवाएं दे रहे जल विशेषज्ञ श्री कुंडलेश्वर पाणिग्रही सहित शहर के भू-जल विशेषज्ञ, पर्यावरणविद् व जल संरक्षण में जुटे विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी व सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहेंगे।

मशहूर पॉन्डमैन रामवीर तंवर, वॉटर एक्सपर्ट कुंडलेश्वर पाणिग्रही होंगे प्रमुख वक्ता

डॉ. कुंडलेश्वर पाणिग्रही, केंद्रीय भू-जल प्राधिकरण द्वारा मान्यता प्राप्त सलाहकार

रायपुर (विश्व परिवार)। डॉ. कुंडलेश्वर पाणिग्रही, वर्षा जल संचयन में पी.एच.डी. है और भारत सरकार के केंद्रीय भू-जल प्राधिकरण (CGWA) द्वारा मान्यता प्राप्त सलाहकार हैं। वर्ष 2017 में प्रतिष्ठित जल स्टार पुरस्कार और 2018 में भारत विकास पुरस्कार से आपको सम्मानित किया गया है। रायपुर नगर पालिक निगम और छत्तीसगढ़ सरकार के सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग से पंजीकृत एक प्रतिष्ठित जल विज्ञानी हैं। जल संरक्षण और जल विज्ञान के क्षेत्र में 30 से अधिक वर्षों के गहरे अनुभव के साथ, उन्होंने भारत के मध्य भाग में 75,000 से अधिक वर्षा जल संचयन प्रणालियों की स्थापना की है। उन्नत भू-भौतिकीय प्रतिरोध ध्वनि उपकरण का उपयोग करके 1.5 लाख से अधिक ट्यूब वेल्स के लिए स्थलों का चयन आपने किया है। इसके अलावा डॉ. पाणिग्रही भारत सरकार द्वारा अधिकृत एक उन्नत एनएबीएल मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला का संचालन करते हैं, जो पेयजल और अपशिष्ट जल परीक्षण सहित जल परीक्षण सुविधाओं की एक व्यापक श्रृंखला प्रदान करता है।

आज भाजपा की जन आभार रैली, सांसद बृजमोहन अग्रवाल करेंगे नगर भ्रमण

बृजमोहन अग्रवाल ने लोकसभा चुनाव-2024 में अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 5,75,285 मतों के बड़े अंतर से हराया

रायपुर (विश्व परिवार)। लोकसभा चुनाव के नतीजे आ चुके हैं और रायपुर लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल ने प्रचंड मतों से विजय श्री प्राप्त की है आपको बता दें कि रायपुर लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 5,75,285 मतों के बड़े अंतर से पटखनी देते हुए छत्तीसगढ़ में सबसे बड़े अंतर से और पूरे देश में नौवें सबसे अधिक अंतर से विजय श्री हासिल करने वाले प्रत्याशी बने जिसको लेकर भाजपा एक भव्य जन आभार रैली निकालने की तैयारी में है इसी संदर्भ में 12 तारीख को भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में जिला भाजपा अध्यक्ष जयंती पटेल के नेतृत्व में रायपुर शहर जिला की आवश्यक बैठक आहूत की गई जहां 14 जून को निकलने वाली जन आभार रैली के संदर्भ में विस्तृत चर्चा की गई एवं जिम्मेदारियां बांटी गई जिसमे रायपुर शहर जिला भाजपा के सभी पदाधिकारियों, मंडल अध्यक्षों और महामंत्रियों उपस्थिती रही अध्यक्ष जयंती पटेल ने कहा की आज आहूत बैठक का मुख्य उद्देश्य रायपुर लोकसभा से हमारे नवनिर्वाचित सांसद वरिष्ठ भाजपा नेता अजेय योद्धा कहे जाने वाले बृजमोहन भैया ने रायपुर लोकसभा क्षेत्र से रिकॉर्ड मतों से विजय प्राप्त की यह हम सभी कार्यकर्ताओं के लिए बहुत ही हर्ष का विषय है और साथ ही साथ जनता द्वारा मिले इस अपरिमित प्रेम और सहयोग के लिए जनता का आभार प्रदर्शन हेतु हम रायपुर लोकसभा के नवनिर्वाचित सांसद बृजमोहन अग्रवाल की उपस्थिति में कल शुक्रवार को शाम 4 बजे जन आभार रैली का आयोजन किया जा रहा है रैली की शुरुवात उरला क्षेत्र में स्थित बंजारी माता मंदिर में मां बंजारी का आशीर्वाद प्राप्त कर की जाएगी उसके पश्चात व्यास तालाब से माँ बंजारी मंदिर, रांवाभाठा बिरगांव, डी-एम टावर, उरकुरा, व्यास तालाब, विमल इनक्लेव, शांता स्वीट्स, पाटीदार भवन भनपुरी, खमतराई, गुढ़ियारी, डी आर एम ऑफिस, ओम कॉम्प्लेक्स, पीली बिल्डिंग, फाफाडीह ब्रिज के निचे, फाफाडीह चौक, क. गुर्जर क्षत्रिय धर्मशाला, रेल्वे स्टेशन, स्टेशन गुरुद्वारा, तेलघानी नाका, नेमीचंद गली, गंजमंडी, राठौर चौक श्री बृजमोहन अग्रवाल जी के पैतृक निवास के पास से होते हुए सिन्धी स्कूल, बढ़ाई पारा दुलार धर्मशाला, मोमिनपारा मस्जिद, तात्यापारा चौक, आजाद चौक, आमापारा चौक, सारथि चौक, लाखे नगर चौक (दक्षिण विधानसभा), लोहार चौक, लिलि चौक, पुरानी बस्ती थाना, कंकाली तालाब, सत्ती बाजार, डॉ. आनंद सक्सेना,, ज्ञ ज्वेलर्स, नहाटा मार्केट, कोतवाली, छोटा पारा मस्जित, राजीव गाँधी चौक फायरब्रिगेड, ह्रष्टरू चौक, आकाशवाणी चौक, कबीर चौक, सागौन बंगला, नेताजी चौक, कक्कड़ चौक, केनाल रोड, तारुसिंह चौक गली नं. 7., छत्तीसगढ़ सिन्धी पंचायत, झुलेलाल मंदिर गली नं. 2, गुरुनानक हार्डवेयर, गुरुनानक द्वार, मरीन ड्राईव, भगत सिंह चौक, दिशा कॉलेज मोड़, अशोका टावर, टर्निंग पॉइंट,

शक्ति नगर राधा कृष्ण मंदिर के पास, लोधीपारा चौक, मंडी गेट, पंडरी कपड़ा मार्केट चौक, एक्सप्रेसवे ब्रिज, श्याम प्लाजा, कचहरी चौक, शास्त्री चौक, जयस्तम्भ चौक पर समापन होगा।

इस अवसर पर जन आभार रैली वाले पूरे मार्ग पर भाजपा नेताओ और स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा अपने नवनिर्वाचित सांसद बृजमोहन अग्रवाल का भव्य स्वागत किया जायेगा जगह जगह स्टेज लगाकर पुष्पवर्षा एवं आतिशबाजी सहित मिठाई वितरण भी की जाएगी हम सभी को रैली की तैयारी हेतु अपने अपने क्षेत्र में अभी से जुटना है और कल अपने क्षेत्र पर नवनिर्वाचित सांसद बृजमोहन अग्रवाल का भव्य स्वागत करना हम सभी की जिम्मेदारी है।

बैठक में मंच संचालन जिला महामंत्री सत्यम दुवा ने किया और आभार प्रदर्शन महामंत्री रमेश सिंह ठाकुर ने किया आज आहूत की गई बैठक में विशेष रूप से जिला उपाध्यक्ष आशु चंद्रवंशी, ललित जयसिंघानी, श्यामा चक्रवर्ती, अकबर अली, संजय तिवारी, शैलिंद्री परगनिहा, मनीषा चंद्राकर, गोपी साहू, राहुल राय, वंदना राठोड, रमेश मिर्घानी, अनिल बाघ सहित सभी सोलह मंडलों के अध्यक्ष और महामंत्री उपस्थित रहे।

सात दिवसीय श्रवण संस्कृति शिविर में नित्य हो रही हैं विभिन्न धार्मिक गतिविधियां

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर राजस्थान एवं श्री आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर मालवीय रोड़ रायपुर के सयुक्त तत्वाधान में आयोजित 7 दिवसीय श्रवण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर ट्रस्ट से नरेंद्र जैन मेनेजिग ट्रस्टी, अध्यक्ष यशवंत जैन, सचिव सुजित जैन, कोषाधक्षय दिलीप जैन ने बताया पांचवे दिन में आचार्य श्री का चित्र अनावरण व दीप प्रवज्लन ट्रस्ट कमेटी के पदाधिकारीयो ने किया, भगवान को पाडुक शीला में विराजित कर अभिषेक श्री अमरचंद सोहनी देवी, यशवंत जया, किशोर वनिता, महेंद्र मेघा प्रथम गौरव आलोक जैन एवं श्री भरतलाल, चंद्रेश, प्रेमलता ज्योति, साध्या जैन परिवार किं तरफ से शांतिधारा किया गया। तत्पश्चात धार्मिक कक्षाएं सागनेर राजस्थान से प्रशिक्षक विद्वान प.श्री पीयूषजी जैन भारिल्ल, प.श्री सौरभ जी जैन, प .श्री प्रियांशु जी जैन के द्वारा ली गई, सायकालीन आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम की श्रृंखला में आज आचार्य धार्मिक हाऊजी संयोजक श्रीमति रोहिता जैन एवं श्रीमती अंजना जैन, श्री दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, श्री दिगंबर जैन महिला मंडल, श्री जैन युवा महासभा रायपुर के द्वारा विद्यासागर हॉल में किया जाएगा।

आगमी 14/06/2024 रात्रि 7 बजे शिविर की लिखित मुख्य परीक्षा ली जाएगी जिसका परिणाम घोषणा, पुरस्कार वितरण, विद्वानजनों का सम्मान शिविर के अंतिम दिन 15/06/24 को प्रात: 8 बजे से मुख्य हाल में किया जाएगा।

ईज डूइंग बिजनेस के तहत ई-वे बिल से संबंधित पूर्व अधिसूचना को यथावत रखा जाए : अमर पारवानी

चेंबर प्रतिनिधि मंडल ने कमिश्नर, सेन्ट्रल टैक्स को ज्ञापन सौंपा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि आज चेम्बर का प्रतिनिधि मंडल चेम्बर प्रदेश अध्यक्ष श्री अमर पारवानी के नेतृत्व में माननीय मो. अबु समा जी (आई.आर.एस), कमिश्नर, सेन्ट्रल टैक्स, रायपुर से मिलकर चेंबर द्वारा पत्र के माध्यम से ईज डूइंग बिजनेस के तहत ई-वे बिल से संबंधित पूर्व अधिसूचना क्रमांक क्रमांक 10-31/2018/वाक/पांच(46) को यथावत रखने हेतु निवेदन किया। जिस पर मो. अबु समा जी (आई.आर.एस), कमिश्नर, सेन्ट्रल टैक्स, रायपुर ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए उचित कदम उठाने की बात कही। चेंबर प्रदेश अध्यक्ष श्री अमर परवानी जी ने बताया कि ईज डूइंग बिजनेस के तहत ई-वे बिल से संबंधित पूर्व अधिसूचना को यथावत रखने चेंबर ने पत्र के माध्यम से कमिश्नर, सेन्ट्रल टैक्स, रायपुर को ज्ञापन सौंपा। अमर पारवानी ने कहा कि वर्तमान मे दिनाँक 24 मई 2024 को जारी अधिसूचना क्रमांक 202 के कारण ई- वे बिल की संख्या एवं अनुपालन से संबंधित जटिलताएं बढ़ जाएगी, जिससे इज ऑफ डूइंग बिजनेस के उद्देश्य को क्षति भी होगी। उन्होंने कमिश्नर, सेन्ट्रल टैक्स, रायपुर से आग्रह किया कि दिनाँक 24 मई 2024 को जारी अधिसूचना पर पुन: विचार करते हुए पूर्व मे जारी अधिसूचना को यथावत रखा जावे।

इस अवसर पर चेम्बर प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, उपाध्यक्ष-नरेंद्र हरचंदानी, टी. श्रीनिवास रेड्डी, जय नानवानी, मंत्री-शंकर बजाज, नीलेश मुंधड़ा, गोल्डी लुनिया एवं सी.ए.मुकेश मोटवानी उपस्थित थे।

रायपुरवासियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना राष्ट्रीय आम महोत्सव

आम की विभिन्न किस्मों को देखने उमड़ पड़े लोग, तीन दिवसीय आम महोत्सव का आज होगा समापन

रायपुर (विश्व परिवार)। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, संचालनालय उद्यानिकी एवं प्रक्षेत्र वानिकी, छत्तीसगढ़ शासन तथा प्रकृति की ओर सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में 12 से 14 जून तक आयोजित राष्ट्रीय आम महोत्सव में आम की 325 से ज्यादा किस्में प्रदर्शनी हेतु लगाई गई है। महोत्सव में सुगंधित और रसीले आमों की जो प्रदर्शनी लगाई गई है उसे प्रदेश के दूर-दराज क्षेत्रों से और देश के विभिन्न हिस्सों से लाया गया है। इनमें दशहरी, लंगड़ा, हापुस, केशर, नीलम, चौसा, माल्दा, फजली, सुंदरजा, नूरजहां, हिमसागर, बॉम्बे ग्रीन, गुलाब खास, जंबो रेड, अल्फांजो, कोकोनट क्रीम, बैगनफली जैसे अन्य देसी किस्मों के आम शामिल हैं। इसके अलावा मियाजाकी, थाई बनाना, रैड पामर जैसी आम की विदेशी किस्में भी शामिल हैं। प्रदर्शनी में हाथीझूल किस्म की आम ने लोगों का आकर्षण खींचा। यह सामान्य आम से लगभग 5 गुना बड़ा होता है। इस किस्म के एक आम का वजन ही लगभग तीन किलो तक होता है। इसका उत्पादन ज्यादातर बस्तर, दंतेवाड़ा, सुकमा, बीजापुर में होता है। इसकी कीमत 150 से 200 रूपये प्रति किलो होती है। इसके अतिरिक्त आम की अनेक देशी किस्मों को भी प्रदर्शित किया गया है। राष्ट्रीय आम महोत्सव में निर्मित सेल्फी जोन युवाओं के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

राष्ट्रीय आम महोत्सव में 56 प्रकार के आम से बने व्यंजनों की भी प्रदर्शनी लगाई गई है। इनमें आम सेवई, आम मिलेट खीर, आम मफिन्नस, आम-नारियल का लड्डू, आम पापड़, आम का आचार, आम का कराची हल्वा, कुल्फी, फिरनी, चटनी, लौंजी, कैंडी, आम-साबूदाना की खीर आदि व्यंजन बनाए गए हैं। सजावट प्रतियोगिता में छात्रों ने आम को रोबोट, फूल, घड़ी आदि के रूप में सजाया गया है। कुकिंग प्रतियोगिता में महिला प्रतिभागियों ने आम से कैरी, कटलेट और मैंगो पुडिंग सहित अन्य व्यंजन बनाए। आम महोत्सव में एक आम जिसने हर किसी का ध्यान खींचा वो है मियाजाकी। इसका उत्पादन जापान में होता है, जिसकी कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में 2 लाख 70 हजार रूपये प्रति किलो है। मियाजाकी आम का वजन करीब 350 ग्राम होता है। इसमें शरीर के लिए जरूरी एंटी आक्सीडेंट, फोलिक एसिड, बीटा-केरोटिन जैसे तत्व पाए जाते हैं। कापोरेट वर्ल्ड में इसका उपयोग भेंट करने में ज्यादा होता है। महोत्सव में थाई बनाना, रैड पामर जैसी आम की विदेशी किस्में भी प्रदर्शनी में रखी गई है।

महोत्सव के दूसरे दिन गुरूवार को आम उगाने वाले कृषक और आम की खेती में रूचि रखने वालों के लिए 12 बजे से 4 बजे तक तकनीकी कार्यशाला एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया था। कार्यशाला में आम की उन्नत खेती की तकनीक, आम उत्पादन में आने वाली समस्याओं तथा उनके निराकरण के संबंध में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जानकारी दी गई तथा किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। इस तीन राष्ट्रीय आम महोत्सव का कल समापन किया जाएगा।

शिक्षित बेरोजगारों के लिए 18 जून को लगेंगे जॉब फेयर

रायपुर (विसं)। जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र रायपुर, द्वारा स्थानीय शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने 18 जून को रोजगार कार्यालय, पुराना पुलिस मुख्यालय परिसर, रायपुर में प्रात: 11 से सांय 2 बजे एक जॉब फेयर आयोजित है। जिसके माध्यम से निजी क्षेत्र के फ्यूजन माईक्रोफाइनेन्स लिमिटेड एवं शेफाली बिजनेस इंटरनेशनल, विक्टर फाइनेंस प्रा.लि.मि. एवं रुद्रा इंटरप्राईजेस, रायपुर द्वारा न्यूनतम 10वीं/ 12वी से स्नातक एवं आईटीआई (इलेक्ट्रिशियन/ फिटर) उत्तीर्ण आवेदको की भर्ती रिलेशनशीप मैनेजर, असिस्टेंट ब्रांच मैनेजर, ब्रांच मैनेजर, सेल्स एक्सीक्यूटीर, सीओएवं इलेक्ट्रिकल / फिटर टेक्निशियन आदि के 17 से अधिक पदों पर की जावेगी। जिसके लिए न्यूनतम 8,000/- से 15,000/- तक प्रतिमाह वेतन निर्धारित है। अत: जॉब फेयर में सम्मिलित होने योग्य एवं इच्छुक आवेदक निर्धारित तिथि एवं स्थल पर अपने बॉयोडाटा/आधार कार्ड एवं शैक्षणिक, तकनीकी योग्यता के प्रमाण पत्रों की छायाप्रति के साथ उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगे।

देवभोग के घने जंगल में खतरों से जूझते हुए की बिजली आपूर्ति बहाल

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय एवं पॉवर कंपनी के अध्यक्ष पी. दयानंद ने सराहा

रायपुर (विश्व परिवार)। मानसून के पहले आए आंधी तूफान से बाधित हुई विद्युत आपूर्ति को सुधारने के लिए प्रदेशभर में बिजली कर्मी जी-जान लगाकर जुटे हुए हैं। राजधानी से 250 किलोमीटर दूर देवभोग के घने जंगल में आंधी तूफान के कारण 11 जून को पेड़ गिरने से बिजली तार टूट गए, जिसे विद्युत अमले ने त्वरित गति से कार्य करते हुए आधी रात को ही सुधारकर उपभोक्ताओं तक विद्युत आपूर्ति बहाल की।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय द्वारा जनसेवा के कार्यों को प्राथमिकता से करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने मौसम की चुनौतियों का सामना कर विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने वाले विद्युतकर्मियों की सराहना की है। पॉवर कंपनी के अध्यक्ष श्री पी. दयानंद ने भी कर्मियों के साहस और समर्पण की प्रशंसा की और उन्हें इसके लिए बधाई दी, वहीं धैर्य रखने के लिए आम जनता को धन्यवाद प्रेषित किया है।

रायपुर ग्रामीण क्षेत्र के कार्यपालक निदेशक श्री संदीप वर्मा ने बताया कि रात 11 जून को तेज आंधी तूफान और बारिश के कारण शाम साढे छह बजे 33 केवी देवभोग फीडर लाइन फॉल्ट(बंद) हो गई। जिसे शीघ्र ही देवभोग के अधिकारी और कर्मचारियों द्वारा पेट्रोलिंग कार्य प्रारंभ किया गया। घने व लंबी दूरी तक के जंगल, सीमित मानव संसाधनों, हाथी व नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के बावजूद विद्युत कर्मियों ने रात में ही पेट्रोलिंग कार्य जारी रखा। कार्यपालन अभियंता गरियाबंद ने अधिकारियों-कर्मचारियों को सुरक्षित रहते हुए, सुरक्षा नियमों का पालन करने के निर्देश दिये तथा सुधार कार्यों की निरतंर जानकारी लेते रहे। कार्यपालक निदेशक श्री वर्मा फ़ोन पर व व्हाट्सएप्प संदेश के माध्यम से विद्युत बहाली हेतु रात्रि में जारी विद्युत कर्मियों के लगातार संपर्क में रहे।

विद्युत कर्मचारियों व्दारा नक्सल प्रभावित व हिंसक वन्य प्राणियों की मौजूदगी वाला क्षेत्र होने के बाद भी गाड़ियों और पैदल पेट्रोलिंग करते हुए, घुप्प अंधेरे में टार्च की रोशनी तथा बरसते पानी के बीच लगातार अपनी जान की परवाह किये बगैर सुधार कार्य जारी रखा। रात 10.43 बजे नाला एबी स्विच के पास पहला फाल्ट, रात 10.51 बजे बुडगेलटप्पा के पास दूसरा फाल्ट इसी प्रकार धुरवागुड़ी नाला एबी स्विच के पास रात 12.22 बजे तीसरा फाल्ट मिला। लाइनों में गिरे पेड़ों और पेड़ों की डालियों को काटकर लाइनों से अलग किया गया। 50 किमी लंबी लाइन की पेट्रोलिंग और 5 से 6 घंटे की अथक मेहनत से किये गए सुधार कार्य के बदौलत रात 12.48 बजे 179 ग्रामों की विद्युत व्यवस्था पूरी तरह बहाल कर ली गई। इस प्रकार पूरी रात आपूर्ति दुरूस्त करते हुए बीती। उदंती सीतानदी टाइगर रिजर्व होने के कारण रखरखाव कार्य की अपनी सीमाएं हैं, बाध्यताओं को देखते हुए टहनियों की कटाई-छंटाई हो पाती है। इसलिए प्रिवेंटिव मेंटेनेंस का कार्य कठिन होता है, लेकिन ब्रेकडाउन मेंटेनेंस की जरूरत को विद्युतकर्मियों ने जोखिम लेते हुए पूर्ण किया।

सोशल मीडिया में पूरे दिन छाया रहा हैशटैग अभियान '#संवर_रहा_छत्तीसगढ़'

विष्णु सरकार के 6 महीने पूरे होने पर भाजपा के सोशल मीडिया अभियान ने हासिल की बड़ी उपलब्धि, मिला अपार जनसमर्थन

जनहित में किये गए वादे को पूरा करने के लिए हमारी सरकार कृत संकल्पित : विष्णुदेव साय

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार के आज 6 महीने पूरे होने पर छत्तीसगढ़ भाजपा के सोशल मीडिया अभियान ने इतिहास रच दिया। सोशल मीडिया में हैशटैग अभियान '#संवर_रहा_छत्तीसगढ़' पूरे दिन छाया रहा। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क में इस पर 65 हजार से ज्यादा पोस्ट हुए। समूचे छत्तीसगढ़ से आम लोगों का इस अभियान को भरपूर समर्थन मिला है। जो छत्तीसगढ़ में एक नया कीर्तिमान है। लोगों ने उत्सुकतापूर्वक विष्णु सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की फोटो, वीडियो, ग्राफिक्स को सोशल मीडिया के सारे प्लेटफॉर्म में पोस्ट और शेयर किया। विधानसभा अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ सरकार के मंत्रियों, विधायकों-सांसदों, भाजपा नेताओं सहित अन्य राज्यों के विधायकों ने भी इस अभियान में शामिल होकर विष्णु सरकार के कार्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

गौरतलब है कि इस ट्रेंड के जरिये भाजपा कार्यकर्ताओं सहित आम लोगों ने विष्णु सरकार के 6 महीने के कामकाज का जमकर प्रचार-प्रसार किया। सरकार की योजनाओं पर आधारित फोटो, वीडियो और ग्राफिक्स को जम कर शेयर किया। अभियान की सफलता से उत्साहित भाजपा नेताओं-कार्यकर्ताओं ने कहा कि इससे एक बात साफ प्रतीत होता है कि मात्र 6 महीने में विष्णु सरकार द्वारा जनहित के लिए किये अभूतपूर्व कार्यों से प्रदेश की जनता खुश है, उत्साहित है। विष्णु सरकार ने मोदी की गारंटी के सभी प्रमुख वादों को सरकार ने प्राथमिकता से पूरा किया है। इससे प्रदेश के हर वर्ग में खुशहाली आई है। सरकार की महतारी वंदन योजना, कृषक उन्नति योजना, तेंदूपत्ता के दाम बढ़ाए जाने, 18 लाख पीएम आवास की स्वीकृति पर आधारित फोटो, वीडियो और ग्राफिक्स को लोगों का अच्छा प्रतिसाद मिला है। सुशासन की सरकार में छत्तीसगढ़ संवर रहा है, आगे बढ़ रहा है।

जनहित में अपनी पूरी क्षमता के साथ काम करेगी हमारी सरकार : मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के रूप में मैंने और मेरे मंत्रिमंडल ने 6 माह का समय पूर्ण कर लिया है। इस यात्रा में आप सबके साथ, विश्वास पर खरा उतरने के लिए सरकार के प्रयास निरंतर जारी हैं। सुशासन के रास्ते पर चलकर हमारी सरकार ने 6 महीने में प्रदेश के हर वर्गों को खुशहाल बनाने का काम किया। मोदी की गारंटी में जो बचे हुए वादे हैं उस पर भी हमारा पूरा ध्यान है। जनहित में किये गए वादे पूरा करने के लिए हमारी सरकार कृत संकल्पित है। सुशासन को ध्येय मानकर हम प्रदेश को विकसित छत्तीसगढ़ की ओर अग्रसर कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के हित के लिए, हर वर्ग-हर जाति के विकास के लिए नवाचार और प्रयास निरंतर जारी रहेंगे और इन प्रयासों में सरकार के मुख्यमंत्री के रूप में विश्वास दिलाता हूं कि हमारी सरकार अपनी पूरी क्षमता के साथ प्रदेशवासियों के हित में इसी तरह काम करती रहेगी।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354